लिखने और उस भाषाका पण्डित होनेमें एक बड़ा ही विषम घाटा रह जाता है; जिससे मनुष्य न उस भाषाका लेखक ही हो सकता है और न वक्ता ही। यही एक प्रधान त्रुटि दूर करनेके लिये, ग्राहकोंसे उपरोक्त अथाह उत्साह मिलता हुआ देखकर, मुझे इस 'हिन्दी-बँगला शिक्षा'का यह दूसरा भाग भी लिखना ही पड़ा।

इस भागमें व्याकरणका आरम्भ करके जो कुछ विषय बँगला सीखनेवालोंकेलिये उपयोगी दिखाई दिये, लगभग सभी लिख दिये गये हैं। व्याकरणसे कड़े चनेको समझाकर मुलायम कर देनेका बहुत कुछ उद्योग भी कर दिया गया है और साथ ही बँगलाके वे घराऊ शब्द जो प्रचलित भाषामें कम आते हैं इसलिये अधिक करके दे दिये गये हैं जिससे बोलचालमें, वक्तृता देते समय अथवा लेख लिखते समय भद्दापन न आ जाय। यह भाग कैसा हुआ, हम अपनी मनोभिलाषा पूरी कर सके या नहीं, अथवा इससे कुछ लाभ होगा या नहीं, यह सरलहृदय समालोचक और साहित्यसेवी तथा बँगला सीखनेवाले हमारे ग्राहकगण ही जानें।

प्रेमी ग्राहकगण और उदारहृदय समालोचकोंके लिये एक बात और भी कहनी है:—लोभ मनमें आते ही मनुष्य भले बुरेका ज्ञान छोड़, असत्पथपर चलनेके लिये तय्यार हो जाते हैं। ठीक यही दशा 'अंगरेज़ी हिन्दी शिक्षा' और 'हिन्दी बँगला शिक्षा'के सम्बन्धमें भी हो रही है। हमारी

सफलता, सम्पादकोंकी विशेष कृपा, ग्राहकों और अँगरेज़ी बँगला प्रोखनेवालोंकी विशेष क़दरदानीने एक विषम हलचल मचा दी है। हम नहीं जानते—साहित्यसेवी कहला-कर, बहुत दिनोंतक हिन्दी-माता की सेवा भी करने-पर, हिन्दीके विद्वानों और सुलेखकोंमें अपनी गणना कराकर तथा ऊँची गद्दीपर बैठकर भी केवल अपने उदरपालनार्थ ऐसे काम करनेके लिये लोग क्यों तय्यार हो जाते हैं जिनसे केवल उनकी नेकनामी, कीर्त्ति और विद्वत्तामें ही बट्टा नहीं लगता बल्कि ख़ास उस साहित्यमाताका भी अपकार होता है जिसके भरोसे उनका उदरपोषण होता है। हम जानते हैं कि उनकी गणना अच्छोंमें हैं—परन्तु दुःखकी बात है कि जिस कार्यमें ऐसे लोगोंने अब हाथ डाला है, उसमें उनका अनुभव नहीं है, उतनी विद्वत्ता भी नहीं है और न उस शैलीसे ही वे परिचित हैं जिसकी ऐसी ग्रंथ-रचनामें विशेष आवश्यकता है। फिर ऐसे कार्य करके, हंस कहलानेका वृथा दावा कर साहित्य-माताका अपकार करना क्या उचित है? क्या एकबार साहित्यसेवी होकर फिर साहित्यकी जड़ काटनी उन्हें उचित है? चाहे जो हो, चाहे केवल उदर-पालनके लिये ही वे ऐसे कार्य क्यों न करते हों; पर हमारी तुच्छ बुद्धिमें योग्य कहलाकर—अयोग्यताका परिचय कदापि न देना चाहिये। कीर्त्तिको स्थायी रखना ही मनुष्यत्व और बुद्धिमत्ता है; न कि थोड़ेसे लोभमें अपनी कीर्त्तिको जलाञ्जलि

देनाही कर्त्तव्य है। दुःखका विषय है कि—नक़लके भरोसेपर, परन्तु क़ानूनी झगड़ोंसे बचते हुए, ऐसा काम भी ऐसेही साहित्य-सेवियोंने करना आरम्भ किया है; जिससे हृदयमें दुःख और क्षोभ होता है। साहित्यकी उन्नति, देशमें विद्याका प्रचार तथा भारतवासियोंका उपकार न होकर साहित्यकी अवनति, विद्याके प्रचारमें बाधा और भारतके नवजीवनोंका अपकार होना सम्भव दिखाई देता है तथा ग्राहक ठगे जाते हैं। एक तो हिन्दीके ग्रंथोंकी क्या दशा है; यह सभोंको मालूम ही है। फ़िर जिनकी शिक्षाकी ओर रुचि हुई, उनकी रुचि बिगाड़कर हिन्दी-ग्रंथ-प्रसारमें बाधा डालना कदापि उचित नहीं है ऐसा करनेसे सर्वसाधारणकी शिक्षासे अरुचि हो सकती है बस, यही कारण है कि सावधान करनेके लिये इतना लिखना पड़ा—बात क्या है, हम नहीं लिख सकते; साहित्यकी बिना कारण अवनति होती देख दुःख हुआ;इससे इतना भी लिख दिया—हमारी बातें सत्य हैं या नहीं, निष्पक्ष और उदार-हृदय समालोचकगण ग्रंथ हाथमें लें, ध्यानसे पढ़कर तुलना करते हुए स्वयं विचार लें।

भवदीय—

हरिदास।

दूसरा भाग

प्रथम खण्ड ।

बँगला व्याकरण ।

जिस पुस्तकके पढ़नेसे बँगला भाषाका ठीक ठीक लिखना और बोलना आता है, उसका नाम "बँगला व्याकरण" है ।

वर्ण-ज्ञान ।

१। पदके प्रत्येक छोटेसे छोटे टुकड़े या भागको वर्ण या अक्षर कहते हैं ।

"হরি পড়িতেছে" । यहां "হরি" और "পড়িতেছে" ये दो

पद मिलकर एक वाक्य बना है। इसमें "হরি" इस पदमें হ, রি ये दो छोटे टुकड़े या भाग हैं और হ+অ, র+ই ये चार छोटेसे छोटे (यानी जिनसे छोटा टुकड़ा नहीं हो सकता ऐसे) टुकड़े या भाग हैं। इसीसे इन चारों में से प्रत्येक को वर्ण कहते हैं। इसी तरह "পড়িতেছে" इस पदमें প, ড়ি, তে, ছে ये चार छोटे भाग और প+অ, ড়+ই, ত+এ, ছ+এ ये आठ छोटेसे छोटे भाग हैं ; इसलिये इनमें से प्रत्येक को वर्ण कहते हैं।

२। बँगला भाषामें सब लेकर उनचास वर्ण या अक्षर हैं। उन्हीं अक्षरोंके समुदाय को वर्णमाला कहते हैं।

३। वर्ण दो भागोंमें बँटे हैं :—स्वर और व्यञ्जन। उनमें १३ स्वर और ३६ व्यञ्जन वर्ण हैं।

स्वर वर्ण।

४। जो वर्ण बिना किसी दूसरे वर्णकी सहायता लिये ही (अपने आप) उच्चारित होते हैं, उनका नाम स्वरवर्ण है। स्वर वर्ण ये हैं,—অ, আ, ই, ঈ, উ, ঊ, ঋ, ঌ, এ, ঐ, ও, ঔ। *

---

* ঌ का प्रायः व्यवहार नहीं होता। केवल কৢ, তৢ, দৢ इत्यादि कुछ थोड़ीसी धातुओंके लिखनेमें उनकी ज़रूरत होती है, इसीसे कोई कोई लोग, ঌ को छोड़कर, स्वर वर्णकी संख्या बारह ही मानते हैं। बंगला भाषामें दीर्घ ঌ नहीं है, किन्तु संस्कृत भाषामें उसका चलन है।

५। स्वर वर्ण दो प्रकारके हैं :—(१) ह्रस्व, और (२) दीर्घ। অ, ই, উ, ঋ, ঌ ये पाँच ह्रस्व और আ, ঈ, ঊ, ৠ, এ, ঐ, ও, ঔ, ये आठ दीर्घ हैं।

অ, ই, উ, ঋ, ঌ इन पाँचोंके उच्चारण में थोड़ा समय लगता है और আ, ঈ, ঊ, ৠ, এ, ঐ, ও, ঔ इन आठोंके उच्चारणमें उनसे कुछ अधिक समयकी ज़रूरत होती है।

स्वर वर्ण जब व्यञ्जन वर्णसे मिलता है तब उसे "বানান" (मात्रा) कहते हैं। অ और ঌ इन दोनोंको छोड़कर और और स्वर वर्णोंको व्यञ्जन वर्णोंके साथ मिलानेसे उनका रूप बदल जाता है। जैसे—

আ=া; ই=ি; উ=ু; ঊ=ূ; ঋ=ৃ; ৠ=ৄ;
এ=ে; ঐ=ৈ; ও=ো; ঔ=ৌ।

व्यञ्जन वा हल वर्ण।

६। स्वर वर्णोंकी सहायता बिना जो वर्ण साफ़ साफ़ उच्चारित नहीं हो (सक) ते, उन्हें व्यञ्जनवर्ण या हलवर्ण कहते हैं। पहले या पीछे स्वर वर्णको मिलाकर न पढ़नेसे व्यञ्जन वर्णका उच्चारण नहीं हो (सक)ता। प्रायः सब ही व्यञ्जन वर्णोंके पीछे 'अकार' लगा रहता है।

व्यञ्जन वर्ण ये हैं :—ক খ গ ঘ ঙ। চ ছ জ ঝ ঞ। ট ঠ ড ঢ ণ; ত থ দ ধ ন। প ফ ব ভ ম। য র ল ব। শ ষ স হ। ং ঃ।

ড়, ঢ়, য়, ये तीनों पृथक वर्ण नहीं हैं। ये केवल ড, ঢ, য,

इन्हीं तीन वर्णोंके रूपान्तर हैं। ये वर्ण जब पदके बीचमें या अन्तमें रहते हैं तब ये ही ड़, ঢ়, য়, माने जाते हैं। जैसे—জড়, দৃঢ়, নয়ন इत्यादि।

जिस व्यञ्जन वर्णमें कोई स्वर नहीं रहता, उसके नीचे (्) ऐसा चिन्ह देना पड़ता है; इस चिन्ह या निशानका नाम 'हसन्त चिन्ह' है *। जैसे—সম্রাট্ इत्यादि।

৭। ক से ম तक, पच्चीस वर्णोंको स्पर्शवर्ण कहते हैं। स्पर्श वर्ण पाँच वर्गोंमें विभक्त हैं; आदि के या पहले वर्णको लेकर वर्गका नाम होता है। जैसे—ক वर्ग, চ वर्ग, ট वर्ग, ত वर्ग, প वर्ग।

৮। য, র, ল, ব, इन चारोंका नाम अन्तःस्थ वर्ण है,

---

* व्यञ्जन वर्णके बाद, स्वर वर्ण रहनेसे वह स्वर वर्ण व्यञ्जन वर्णमें मिल जाता है। जैसे—জল = জ্ + অ + ল্ + অ। দিন = দ্ + ই + ন্ + অ। বালিকা = ব্ + আ + ল্ + ই + ক্ + আ। চন্দ্র = চ্ + অ + ন্ + দ্ + র্ + অ

हर एक पदमें दो या उससे अधिक वर्ण रहते हैं; इसी प्रकार वर्ण-विन्यास द्वारा यह साफ़ साफ़ मालूम हो जाता है कि कौन वर्ण पहिले और कौन वर्ण पीछे है।

= इसका नाम समान चिन्ह है। + इसका नाम युक्त चिन्ह है अर्थात् इसके द्वारा दो वर्णोंका योग या जोड़ समझा जाता है।

শ, ষ, স, হ, इन चारों का नाम ऊष्म वर्ण है ; (ং) और (ँ) का नाम अनुनासिक वर्ण है और (ঃ) विसर्गका नाम अयोगवाह वर्ण है। *

८। उच्चारण-स्थानके भेदोंसे वर्णोंके नामोंमें भी भेद होता है। जैसे—

অ আ হ ক খ গ ঘ ঙ इनका उच्चारण-स्थान कण्ठ है; इसलिये इन्हें कण्ठ्य वर्ण कहते हैं।

ই ঈ চ ছ জ ঝ ঞ শ য় इनका उच्चारण-स्थान तालू है इसलिये इन्हें तालव्य वर्ण कहते हैं।†

ঋ ৠ ট ঠ ড ঢ ণ র ষ ড় ঢ় इनका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है इसलिये इन्हें मूर्द्धन्य वर्ण कहते हैं। ‡

ঌ ত থ দ ধ ন ল স इनका उच्चारण-स्थान दन्त है इस लिये इन्हें दन्त्यवर्ण कहते हैं।

উ ঊ প ফ ব ভ ম इनका उच्चारण स्थान ओष्ठ है ; इसीसे इन्हें ओष्ठ्यवर्ण कहते हैं।

---

* कोई कोई अनुस्वार और विसर्ग इन दोनोंको ही अयोगवाह कहते हैं।

† য়, यह वर्ण पदके बीचमें या अन्तमें लगाया जाता है। जैसे ; অয়ন, শয়ন, জয়।

‡ ড় और ঢ় इन दोनों वर्णोंका प्रयोग भी पदके बीचमें या अन्तमें होता है। जैसे—ঝাড়, জড়তা, মূঢ়, দৃঢ়তা।

ए ऐ, इन दो वर्णों का उच्चारण-स्थान कण्ठ और तालू है इसलिये ये कण्ठ्य-तालव्य वर्ण हैं।

ओ औ इन दो वर्णों का उच्चारण-स्थान कण्ठ और ओष्ठ है इस वास्ते ये कण्ठोष्ठ वर्ण हैं।

अन्तःस्थ 'व' का उच्चारण स्थान दन्त और ओष्ठ है; इस लिये यह दन्त्योष्ठ वर्ण है।

अनुस्वार और चन्द्रविन्दु नाकसे उच्चारित होते हैं; इस लिये ये अनुनासिक वर्ण हैं।

विसर्ग 'आश्रय स्थान' भागी है, अर्थात् जब जिस स्वरवर्ण के बाद रहता है, तब उसी स्वर वर्णका उच्चारण-स्थान विसर्गका उच्चारण-स्थान होता है। विसर्गका उच्चारण स्वर वर्णके बिना, 'ह' के उच्चारणकी तरह होता है। जैसे—पुनः=पुनह्।

विसर्ग जिस स्वर वर्णके बाद होता है वह दीर्घकी तरह उच्चारित होता है। जैसे—प्रातःकाल।

संयुक्त वर्ण।

१०। यदि एक व्यञ्जन वर्णके बाद एक या उससे ज़ियादा व्यञ्जन वर्ण हों और बीचमें स्वर वर्ण न हो, तो वे सब व्यञ्जन वर्ण एक साथ मिल जाते हैं। इस तरह मिलकर, व्यञ्जन वर्ण जो रूप धारण करते हैं उसको युक्ताक्षर कहते हैं।

संयुक्त या मिले हुए वर्णके पहलेका वर्ण (पूर्व्व वर्ण) ऊपर और पीछेका वर्ण (परवर्ण) प्रायः नीचे लिखा जाता है। जैसे —ব্+দ্=ব্দ; প্+ন্=প্ন; ন্+দ্+র্=ন্দ্র।

थोड़े से संयुक्त वर्णोंका रूप बदल जाता है। वे नीचे दिखाये गये हैं। जैसे—ঙ+গ=ঙ্গ, জ+ঞ=জ্ঞ, ক্+ষ=ক্ষ, চ+ঞ=ঞ্চ, দ+ধ=দ্ধ, ত+র=ত্র, ক+ত=ক্ত, ষ+ণ=ষ্ণ, হ+ন=হ্ন, ন্+থ=ন্থ, হ+ম=হ্ম, ত্+ত=ত্ত, প+র=প্র, গ+র=গ্র इत्यादि।

র্ किसी व्यञ्जन वर्णके पहिले रहनेसे, बादके वर्णके माथे पर जाकर (´) ऐसा आकार धारण करता है। इसका नाम रेफ है। रेफ युक्त कोई कोई वर्णका द्वित्व हो जाता है अर्थात् वे वर्ण दो हो जाते हैं। जैसे—র+দ=র্দ্দ। और; আর্দ্র, চর্চ্চা, নির্জ্জর इत्यादि।

'ছ' द्वित्व होनेसे 'চ্ছ', 'থ' द्वित्व होनेसे 'ত্থ', 'ধ' द्वित्व होनेसे 'দ্ধ', और ভ द्वित्व होनेसे 'ব্ভ', ऐसा रूप धारण करता है। ঋ, র और ন युक्त होनेसे 'শ'कार और 'স'कार का उच्चारण 'ছ'कार के समान होता है; जैसे—শ্রাদ্ধ, সৃষ্ট, স্নান इत्यादि। 'স'कारके साथ ত या থ युक्त होनेसे वह 'স'-कार 'চ'कार की तरह उच्चारित होता है। जैसे—প্রস্তাব, অবস্থিতি। जब 'হ' के नीचे कोई वर्ण लगता है तब वह 'হ' नीचेवाले वर्णके बाद उच्चारित होता है; जैसे আহ্লাদ =আল্+হাদ, মধ্যাহ্ন=মধ্যান্+হ, সহ্য=সয্+হ इत्यादि।

जब 'य' किसी वर्ण में संयुक्त होता है तो उसका उच्चारण 'इअ' और अन्त:स्थ 'व' किसी वर्ण में युक्त होनेसे, उच्चारण 'उअ' ऐसा होता है; जैसे—দিব্য=দিব্+উঅ, বিল্ব= বিল্+উঅ इत्यादि।

सन्धि प्रकरण।

११। दो वर्ण पास पास होनेसे आपसमें एक दूसरेसे मिल जाते हैं, उस मिलनको सन्धि कहते हैं।

१२। सन्धि दो प्रकार की है;—स्वर सन्धि और व्यञ्जन सन्धि।

१३। एक स्वर वर्णके साथ दूसरे स्वर वर्णके मिलनको स्वर-सन्धि कहते हैं।

१४। व्यञ्जन वर्णके साथ व्यञ्जन वर्ण या व्यञ्जनवर्णके साथ स्वरवर्णके मिलनको व्यञ्जन-सन्धि कहते हैं।

स्वर-सन्धि।

१५। অ के बाद অ या আ रहनेसे, और दोनोंके मिलनेसे আ होता है और वह আ पूर्व्व वर्णमें मिल जाता है। जैसे শীত+অংশু=শীতাংশু। यहाँपर शीत शब्द के अन्तमें অ है और पीछे অংশু शब्दका অ है; इसलिये उन दोनोंके मिलनेसे आकार हुआ और वह आकार तकार में मिलकर "शीतांशु"

पद हुआ। इसी तरह পীত + অম্বর = পীতাম্বর, কুশ + আসন = কুশাসন।

१६। আ के बाद অ अथवा আ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे আ होता है, और वह আ पूर्व वर्णमें मिल जाता है। जैसे বিদ্যা + অভ্যাস = বিদ্যাভ্যাস। यहाँपर विद्या शब्द के अन्तमें आ है और उस आ के बाद अभ्यास शब्दका अ है; इसलिये आ में अ मिलकर आ हुआ और वह आ पूर्व वर्ण 'द्य' में मिलकर "विद्याभ्यास" पद हुआ। उसी तरह তারা + আকার = তারাকার, মহা + আশয় = মহাশয় इत्यादि।

१७। ই के बाद ই या ঈ रहने से, और दोनोंके मिलनेसे ঈ होती है, वह ঈ पूर्व वर्णमें मिल जाती है। जैसे অতি + ইত = অতীত। यहाँ पर अति के इकार के बाद इति शब्द का इकार है; इसलिये दोनों इकारों के मिलनेसे ईकार हुआ और वही ईकार पूर्व वर्ण तकार में मिलकर "अतीत" पद हुआ। इसीतरह গিরি + ইন্দ্র = গিরীন্দ্র, গিরি + ঈশ = গিরীশ इत्यादि।

१८। ঈ के बाद ই या ঈ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ঈ होती है वह ঈ पूर्व वर्ण में मिल जाती है। जैसे অতী + ইব = অতীব। यहाँपर ईकार के बाद इ है; इसलिये दोनों के मिलनेसे ईकार हुआ और वही ईकार पूर्व वर्ण तकार में मिल गया; जिससे अती + इव = अतीव के हुआ; इसी तरह পৃথ্বী + ঈশ্বর = পৃথ্বীশ্বর, কালী + ঈশ = কালীশ इत्यादि।

१८। उ के बाद उ या ऊ रहनेसे और दोनों के मिलनेसे ऊ होता है, यह ऊ पूर्व वर्ण में मिल जाता है। जैसे,—বিধু + উদয় = বিধূদয়। इसी तरह সাধু + উক্তি = সাধূক্তি। তনু + ঊর্দ্ধ তনূর্দ্ধ। বিধু + উদয় = বিধূদয়। यहाँपर विधु शब्दके ह्रस्व उ के बाद उदयका उ है; इसलिये ह्रस्व उ के बाद ह्रस्व उ रहनेके कारण और दोनोंके मिलनेसे दीर्घ ऊ हुआ। अब इसी दीर्घ ऊके पूर्ववर्ण ध में मिलनेसे विधूदय पद बन गया। সাধূক্তি—সাধু + উক্তি = সাধূক্তি। यहाँ पर साधु इस शब्दके ह्रस्व उकारके बाद उक्ति शब्दका ह्रस्व उ है; इसीसे ह्रस्व उकार के बाद ह्रस्व उ रहनेके कारण और दोनोंके मिलनेसे दीर्घ ऊ हुआ और वह ऊ पूर्ववर्ण ध कारमें मिलकर "साधूक्ति" पद बना। তনূর্দ্ধ—তনু + ঊর্দ্ধ = তনূর্দ্ধ। यहाँ पर तनु शब्दके ह्रस्व उकारके बाद ऊर्द्ध शब्दका दीर्घ ऊ है; इसलिये ह्रस्व उकारके बाद दीर्घ ऊ रहनेके कारण और दोनोंके मिलनेसे दीर्घ ऊ हुआ और वह दीर्घ ऊ पूर्ववर्ण न में मिलकर "तनूर्द्ध" पद बना।

२०। ऊ के बाद उ या ऊ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ऊ होता है, और ऊ पूर्ववर्णमें मिल जाता है। जैसे—তনূ + উদ্বেগ = তনূদ্বেগ। यहाँ पर तनूके ऊ के बाद उद्वेग का उ रहनेसे और दोनोंके मिल जानेसे ऊ होगया और पूर्ववर्ण न में युक्त हुआ। इसी तरह ভূ + ঊর্দ্ধ = ভূর্দ্ধ इत्यादि।

२१। অ या আ के बाद ই या ঈ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे এ हो जाता है; और এ पूर्ववर्णमें मिल जाता है। जैसे—নগ + ইন্দ্র

= নগেন্দ্র, মত্ত + ইভ = মত্তেভ, রমা + ইশ = রমেশ, ধন + ঈশ্বর = ধনেশ্বর, উমা + ঈশ = উমেশ। नग + इन्द्र = नगेन्द्र ;—यहाँ पर नग शब्दके अ के बाद इन्द्रको इ है ; इसलिये अ के बाद इ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ए हुआ और वह ए पूर्ववर्णमें मिलकर नगेन्द्र पद बना है। धन + ईश्वर = धनेश्वर;—यहाँ पर अ के बाद ई रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ए हुआ है। रमा + ईश = रमेश ; यहाँ पर आ के बाद दीर्घ ई रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ए हुआ है।

२२। অ या আ के बाद উ या ঊ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ও होता है, और वह ও पूर्ववर्ण में मिल जाता है। जैसे—সূর্য্য + উদয় = সূর্য্যোদয়, নল + উদয় = নলোদয়, তরঙ্গ + ঊর্ম্মি = তরঙ্গোর্ম্মি, মহা + উদধি = মহোদধি, গঙ্গা + ঊর্ম্মি গঙ্গোর্ম্মি। सूर्य्य + उदय = सूर्य्योदय ;—यहाँ पर अकारके बाद ह्रस्व उ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ओकार हुआ और ओकार पूर्ववर्णमें मिलकर सूर्य्योदय पद बना। महा + उदधि = महोदधि ;—यहाँ पर आकारके बाद उकार रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ओकार हुआ है। इसी तरह नलोदय, तरङ्गोर्म्मि, गङ्गोर्म्मि हैं।

२३। অ या আ के बाद ঋ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे অর্ होता है। অর का অ पूर्ववर्णमें मिल जाता है और র্ पर वर्णके माथेपर चला जाता है। अर्थात् रेफ हो जाता हैं। जैसे,—দেব + ঋষি = দেবর্ষি, উত্তম + ঋণ = উত্তমর্ণ, অধম +

ঋণি = অধমর্ণি, মহা + ঋষি = মহর্ষি । देव + ऋषि = देवर्षि ;— यहाँ पर अकारके बाद ऋ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे अर हुआ; अकार पूर्ववर्णमें मिल गया और र् के पर वर्ण ष के माथेपर चले जानेसे "देवर्षि" पद बना। महा + ऋषि = महर्षि ;— यहाँ पर आकारके बाद ऋ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे अर् हुआ है। अकार पूर्ववर्णमें मिल गया और र पर वर्णके माथेपर चला गया है। इसी तरह उत्तमर्णि अधमर्णि भी बने हैं।

२४। तृतीया तत्पुरुष समासमें अ या आ के बाद ঋত शब्द रहनेसे पूर्ववर्त्ती अ या আ के साथ मिलकर ঋত शब्द का আর্ होजाता है आर् का আ पूर्ववर्णमें मिल जाता है और र् पर वर्णके मस्तक पर चला जाता है अर्थात् रेफ हो जाता है। जैसे,—শোক + ঋতি = শোকার্ত্ত, তৃষ্ণা + ঋতি = তৃষ্ণার্ত্ত। * शोक + ऋति = शोकार्त्त ;—यहाँ पर शोक शब्दके अ के बाद ऋति शब्दका ऋकार रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे आर् हुआ ; आ पूर्ववर्ण क में मिल गया और र पर वर्ण तकारमें जाकर "शोकार्त्त" पद बना।

२५। অ या আ के बाद এ या ঐ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ঐ होता है। ঐकार पूर्ववर्णमें मिल जाता है जैसे— শত + এক = শতৈক, বার + এক = বারৈক, দিন + এক = দিনৈক, জন + এক = জনৈক, এক + এক = একৈক, মত + ঐক্য =

---

* रेफ युक्त व्यञ्जन वर्णका विकल्पमें द्वित्व होता है, जैसे पूर्वक, पूर्व्वक ; निर्दय, निर्द्दय इत्यादि।

মতৈক্য, বিপুল + ঐশ্বর্য্য = বিপুলৈশ্বর্য্য, মহা + ঐরাবত = মহৈরাবত, মহা + ঐশ্বর্য্য = মহৈশ্বর্য্য, অতুল + ঐশ্বর্য্য = অতুলৈশ্বর্য্য।

वार + एक = वारैक,—यहाँ पर वार शब्दके आकारके बाद एक शब्दका एकार रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ऐकार हुआ और ऐकार पूर्व वर्ण रकारमें मिलकर "वारैक" पद बना। अतुल + ऐश्वर्य्य = अतुलैश्वर्य्य,—यहाँ पर अकारके बाद ऐकार रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ऐकार हुआ है। महा + ऐरावत = महैरावत;—यहाँ पर आकारके बाद ऐकार रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ऐकार हुआ हैं। इसीतरह, दिनैक, जनैक, एकैक, मतैक्य, विपुलैश्वर्य्य, महैश्वर्य्य हैं।

२६। অ या আ के बाद ও या ঔ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ঔ हो जाता है। वही ঔ पूर्व वर्णमें मिल जाता है। जैसे—জল + ওকাঃ = জলৌকাঃ, পত্র + ওঘ = পত্রৌঘ, নব + ঔষধি = নবৌষধি, মহা + ঔষধি = মহৌষধি, গত + ঔৎসুক্য = গতৌৎসুক্য, इत्यादि। जल + ओकाः = जलौकाः;—यहाँ पर जल शब्दके अकारके बाद ओकाः शब्दका ओकार रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे औकार हुआ और वही औकार पूर्ववर्ण लकारमें मिलकर "जलौकाः" पद बन गया। इसी तरह, पत्रौघ, नवौषधि इत्यादि भी बने हैं।

२७। ই और ঈ के अलावः और कोई स्वरवर्ण ই या ঈ के बादमें रहनेसे ই वा ঈ के स्थानमें য् हो जाता है, वह য पूर्ववर्णमें मिल जाता है और बादका स्वर उसी यकारमें मिल जाता है।

जैसे—যদি + অপি = যদ্যপি, অতি + আহার = অত্যাহার, প্রতি + আশা = প্রত্যাশা, প্রতি + আদেশ = প্রত্যাদেশ, নদী + উত্থিত = নদ্যুত্থিত, কালী + আগার = কাল্যাগার, इत्यादि। यदि + अपि = यद्यपि ;—यहाँ पर यदि शब्दके इकारके बाद अपि शब्दका अकार है ; इसीसे इ और ई के सिवाय और कोई स्वर वर्ण बादमें रहनेसे इकारके स्थानमें य हुआ और वही य परवर्त्ती स्वरवर्ण अपिके अकार और पूर्ववर्ण दकारमें संयुक्त होकर "यद्यपि" पद बना। इसी तरह अत्याहार, प्रत्याशा इत्यादि भी बने हैं।

२८। उ और ऊ के सिवाय और कोई स्वरवर्ण बादमें रहने से উ বা ঊ के स्थानमें व होता है, वह व पूर्ववर्णमें मिल जाता है और परवर्त्ती स्वर भी पूर्व वर्णमें मिल जाता है। जैसे—সু + আগত = স্বাগত, সাধু + ইচ্ছা = সাধ্বীচ্ছা, তনু + আচ্ছাদন—তন্বাচ্ছাদন, চক্ষু + আদি = চক্ষ্বাদি इत्यादि। सु + आगत = स्वागत ;—यहाँ पर सु शब्दके उकारके बाद आगत शब्दका आकार है ; इसीसे उ ऊ के सिवाय अन्य स्वरवर्ण बादमें रहनेसे उकारके स्थानमें व हुआ। व और परवर्त्ती स्वर वर्ण आगतके आकारके पूर्व वर्ण सकारमें मिल जानेसे "स्वागत" पद बना ; इसी तरह साध्वीच्छा और तन्वाच्छादन बने हैं।

२९। ऋ के सिवाय और कोई स्वर वर्ण बादमें रहनेसे ঋ के स्थानमें র্ होता है ; वह র্ पूर्व वर्णमें मिल जाता है और

परवर्त्ती स्वर उसी रकारमें मिल जाता है। जैसे—मातृ+आज्ञा=মাত্রাজ্ঞা, इत्यादि। मातृ+आज्ञा=मात्राज्ञा ;—यहाँ पर मातृ शब्दके ऋकारके बाद आज्ञाका आकार है; इससे ऋ भिन्न स्वर वर्ण बादमें रहनेके कारण ऋकारके स्थानमें र हुआ और वह र और परवर्त्ती स्वर वर्ण आज्ञाका आकार पूर्व वर्ण तकारमें मिलकर "मात्राज्ञा" पद बना।

३०। स्वरवर्ण परे रहनेसे पूर्ववर्त्ती এ, ঐ, ও, ঔ के स्थानमें क्रम क्रमसे অয়, আয়, অব, আব होता है यानी এ की जगह पर অয়, ঐ की जगह पर আয়, ও के स्थानमें অব, और ঔ के स्थानमें আব होता है; অয়, আয়, অব, আব के অ और আ पूर्व वर्णमें मिल जाते हैं और परवर्त्ती स्वर এ, য় में और ও, ব में मिल जाता है। जैसे- নে+অন=নয়ন, বিনৈ+অক=বিনায়ক, গৈ+অক=গায়ক, পো+অন=পবন, ভো অন=ভবন, শো+অন=শবন, নৌ+ইক=নাবিক। ने+अन=नयन ;—यहाँ पर एकारके बाद स्वरवर्ण रहनेसे एकार की जगह अय हुआ और अयका अकार पूर्ववर्ण नकार में मिलकर "नयन" पद बना। इसी तरह विनै+अक=विनायक;—यहाँपर ऐकारके बाद स्वरवर्ण है इसलिये ऐकारके स्थानमें आय हुआ और आयका आकार पूर्ववर्ण नकारमें मिलकर "विनायक" पद बना। इसी तरह गै+अक=गायक पो+अन=पवन ;—यहाँ पर ओकारके बाद स्वरवर्ण रहनेसें ओकारके स्थानमें अव हुआ और अवका अकार पूर्व वर्ण प-

कारमे मिलकर "পবন" पद बना; इसीतरह 'ভবন শ্রবন' भी बने हैं। নৌ + ইক = নাবিক ;—यहाँ पर औकारके बाद स्वर वर्ण रहनेके कारण औंकारके स्थानमें आव हुआ और आव का आकार पूर्ववर्ण नकारमें मिलकर "নাবিক" बना।

व्यञ्जन सन्धि ।

२१। स्वर वर्ण या वर्गका तीसरा चौथा वर्ण अथवा য, র, ল, ব, হ परे रहनेसे, वर्गके पहले वर्ण के स्थान में उस वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है। जैसे—বাক্ + আড়ম্বর = বাগাড়ম্বর, বাক্ + ইন্দ্রিয় = বাগিন্দ্রিয়, দিক্ + অন্ত = দিগন্ত, ত্বক + ইন্দ্রিয় = ত্বগিন্দ্রিয়, দিক্ + গজ = দিগ্গজ, বাক্ + জাল = বাগ্জাল, বাক্ + দান = বাগ্দান, বাক্ + দেবী = বাগ্দেবী, দিক্ + বিদিক = দিগ্বিদিক, ষট্ + দল = ষড়দল, উৎ + ঘাটন উদ্ঘাটন, সৎ + বিদ্যা = সদ্বিদ্যা, জগৎ + বল্লভ = জগদ্বল্লভ, অপ + জ = অব্জ इत्यादि।

२२। पञ्चम वर्ण परे रहनेसे वर्गके पहिले वर्णके स्थानमें पञ्चम वर्ण होता है; और अगर দ के बाद ন या ম रहे तो उस দ के स्थानमें ন हो जाता है। जैसे—দিক্ + নাগ = দিঙনাগ, দিক্ + মুখ = দিঙ্মুখ, অপ্ + ময় = অম্ময়, খদ্ + মুখ = খন্ম খ, উৎ + নয়ন = উন্নয়ন, তদ্ + নীর = তন্নীর।

३३। চ या ছ परे रहनेसे पूर्ववर्त्ती ৎ या দ্ के स्थानमें চ होता है। जैसे—শরৎ + চন্দ্র = শরচ্চন্দ্র, উৎ + চারণ = উচ্চারণ, উৎ + ছেদ = উচ্ছেদ, তদ্ + চরণ = তচ্চরণ, তদ্ + ছাত্র = তচ্ছাত্র।

३४। জ अथवा ঝ परे रहने से पूर्ववर्त्ती ৎ या দ্ के स्थानमें জ होता है। जैसे—উৎ + জ্বল = উজ্জ্বল, তৎ + ঝটিকা = তজ্ঝটিকা।

३५। ট या ঠ परे रहने से पूर्ववर्त्ती ৎ और দ্ के स्थानमें ট होता है। जैसे—উৎ + টলন = উট্টলন, তদ + ঠকার = তট্-ঠকার।

३६। ড या ঢ परे रहनेसे पूर्ववर्त्ती ৎ या দ্ के स्थानमें ড होता है। जैसे—উৎ + ডীন = উড্ডীন, তদ্ + ঢক্কা = তড্ঢক্কা, বৃহৎ + ঢক্কা = বৃহড্ঢক্কা।

३७। यदि চ या জ के बाद ন रहे तो ন के स्थान में ঞ होता है। जैसे—যাচ্ + না = যাচ্ঞা, রাজ + নী = রাজ্ঞী।

३८। यदि ল परे हो तो पूर्ववर्त्ती ৎ, দ্ और ন্ के स्थानमें ল होता है, और ন के पूर्ववर्णमें चन्द्रविन्दु लग जाता है। जैसे—উৎ + লাস = উল্লাস, ভবৎ + লেখা = ভবল্লেখা, উৎ + লেখ = উল্লেখ, উৎ + লঙ্ঘন = উল্লঙ্ঘন। তদ্ + লোভ = তল্লোভ, এতদ্ + লীন = এতল্লীন, বিদ্বান্ + লেখক = বিদ্বাঁল্লেখক।

३९। यदि ৎ या দ্ के बाद শ रहे तो ৎ और দ্ के

स्थानमें च् और श् के स्थानमें छ होता है। जैसे—ভবৎ+শংখ=ভবচ্ছংখ, উত=শৃঙ্খল=উচ্ছৃঙ্খল. জগৎ+শরণ্য=জগচ্ছরণ্য, তদ্+শম্বুক=তচ্ছম্বুক।

४०। ৎ या দ के बाद হ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे দ্ধ होता है। जैसे,—উৎ+হার=উদ্ধার, উৎ=হত=উদ্ধত, তদ্+হরিণ=তদ্ধরিণ।

४१। ষ के बाद ৎ या থ रहनेसे ৎ के स्थानमें ট और থ के स्थानमें ঠ होता है। जैसे—আকৃষ্+ত=আকৃষ্ট, ষষ্+থ=ষষ্ঠ।

४२। स्पर्श वर्ण परे रहने से पदके अन्तस्थित ম্ के स्थान में अनुस्वार होता है अथवा जिस वर्ग का वर्ण परे रहता है ম্ के स्थान में उसी वर्ग का पञ्चम वर्ण होता है। और अन्तःस्थ और ऊष्मवर्ण परे रहनेसे ম के स्थान में केवल अनुस्वार होता है। जैसे—সম্+কীর্ণ=সঙ্কীর্ণ या সংকীর্ণ, কিম্+কর=কিঙ্কর या কিংকর, সম্+গতি=সঙ্গতি या সংগতি, কিম্+চিত=কিঞ্চিৎ या কিংচিৎ, সম্+পূজ্য=সম্পূজ্য या সংপূজ্য, সম্+ভৃতি=সম্ভৃতি या সংভৃতি, সম্+যম্=সংযম, সম্+যোগ=সংযোগ সম্+রক্ষণ=সংরক্ষণ, সম্+লগ্ন=সংলগ্ন, সম্+বাদ=সংবাদ, সম+শয়=সংশয়, সম+হৃদ=সংহৃদ।

४३। व्यञ्जन वर्ण परे रहनेसे দিব্ शब्द के स्थानमें দ্যু होता है। जैसे—দিব্+লোক=দ্যুলোক, দিব্+ভবন=দ্যুভবন।

४४। स्वरवर्ण के बाद छ रहने से छ के स्थानमें च्छ होता है। जैसे—পরি + ছেদ = পরিচ্ছেদ, অব + ছেদ = অবচ্ছেদ, স + ছিদ্র = সচ্ছিদ্র, বৃক্ষ + ছায়া = বৃক্ষচ্ছায়া, গৃহ + ছায়া = গৃহচ্ছায়া।

४५। উৎ शब्दके बाद স্থা और স্তম্ভ धातुके "স" का लोप होता है। जैसे—উৎ + স্থান = উত্থান, উৎ + স্তম্ভ = উত্তম্ভ।

४६। সম্ और পরি के बाद কৃ धातुका पद रहनेसे वह कृ धातु निष्पन्न पदके पूर्व्व क्रमशः স্ और ষ্ होता है अर्थात सम्के बाद स और परि के बाद ष होता है। जैसे—সম্ + করণ = সংস্করণ, সম্ + কৃত = সংস্কৃত, সম্ + কার = সংস্কার, পরি + কার = পরিষ্কার।

४७। চ या ছ बादमें रहने से विसर्ग के स्थान में শ होता है। जैसे—মনঃ + চকোর = মনশ্চকোর, নিঃ + চয় = নিশ্চয়, শিরঃ + ছেদ = শিরশ্ছেদ, উরঃ + ছদ্ = উরশ্ছদ্।

४८। ট या ঠ परे रहने से विसर्ग के स्थानमें ষ্ होता है। जैसे—ধনুঃ + টঙ্কার = ধনুষ্টঙ্কার।

४९। ত या থ परे रहने से विसर्ग के स्थान में স होता है। जैसे—নিঃ + তেজ = নিস্তেজ, দুঃ + তর = দুস্তর, ইতঃ + ততঃ ইতস্ততঃ।

५०। अकार वर्गके तीसरे, चौथे, पाँचवे वर्ण अथवा য, র, ল, ব, হ, के परे रहने से अकार और अकार के बाद के विसर्ग इन दोनोंके मिलनेसे "ও" होता है। वह पूर्व ओकार वर्णमें

मिल जाता है और परे अकार रहनेसे उसका लोप होता है। जैसे—ততঃ + অধিক = ততোধিক, মনঃ + গত = মনোগত, অধঃ + গমন = অধোগমন, সদ্যঃ + জাত = সদ্যোজাত, পয়ঃ + নিধি = পয়োনিধি, যশঃ + ধন = যশোধন, মনঃ + যোগ = মনোযোগ, মনঃ + বেগ = মনোবেগ, इत्यादि।

५१। स्वरवर्ण, वर्गके तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण अथवा য র ল ব হ के परे रहनेसे अकार के बादके র जात विसर्ग के स्थान में र् होता है। यदि. स्वर वर्ण या গ, ঘ, ঙ, জ, ঝ, ঞ, ড, ঢ, ণ, দ, ধ, ন, ব, ভ, ম और য র ল ব হ के परे रहता है तो अकार के बादके र जात विसर्ग के स्थान में র होता है। पूर्व्व लक्षण के अनुसार ओकार नहीं होता। जैसे—অহঃ + অহ = অহরহ, প্রাতঃ + আশ = প্রাতরাশ, পুনঃ + জন্ম = পুনর্জ্জন্ম, অন্তঃ + আত্মা = অন্তরাত্মা, অন্তঃ + দেশ = অন্তর্দ্দেশ, পুনঃ + উক্তি = পুনরোক্তি।

५२। स्वरवर्ण, वर्गका तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण या য র ল ব হ परे रहने से অ আ भिन्न स्वरवर्णके बाद के विसर्ग की जगह র् होता है। जैसे—নিঃ + ভয় = নির্ভয়, বহিঃ + গত = বহির্গত, দুঃ + আত্মা = দুরাত্মা, দ্বিঃ + উক্তি = দ্বিরুক্তি, দুঃ + লভ = দুর্লভ।

५३। র परे रहने से विसर्ग के स्थान में जो র् होता है, उस র্ का लोप होता है और पूर्व्व स्वर दीर्घ हो जाता है।

जैसे—নিঃ + রোগ = নীরোগ, নিঃ + রস = নীরস, নিঃ + রব = নীরব, চক্ষুঃ + রাগ = চক্ষুরাগ।

५४। স্থ परे रहने से, पूर्ववर्त्ती विसर्ग का विकल्प में लोप होता है। जैसे—মনঃ + স্থ = মনস্থ या মনঃস্থ, দুঃ + স্থ = দুস্থ, इत्यादि।

५५। समास में ক খ প ফ परे रहनेसे विसर्ग के स्थान में विकल्प से স होता है; और वही স् अगर অ আ भिन्न स्वरवर्ण के बाद का होता है तो ষ् हो जाता है। जैसे—নিঃ + কর্ম্মা = নিষ্কর্ম্মা या নিঃকর্ম্মা; ভাঃ + কর = ভাস্কর, ভাঃকর; দুঃ + কর = দুষ্কর, দুঃকর; তেজঃ + কর = তেজস্কর, তেজঃকর; ভাঃ + পতি = ভাস্পতি, ভাঃপতি; নিঃ + ফল = নিষ্ফল, নিঃফল।

५६। अकार भिन्न स्वरवर्ण परे रहनेसे अकार के बाद के विसर्ग का लोप होता है। लोप के बाद फिर सन्धि नहीं होती। जैसे—অতঃ + এব = অতএব, পয়ঃ + ওঘ = পয়ওঘ।

५७। बँगला भाषामें पदके अन्तस्थित विसर्ग का विकल्पमें लोप होता है। यथा—ফলতঃ, ফলত; বিশেষতঃ, বিশেষত; বস্তুতঃ, বস্তুত; মনঃ, মন।

णत्व विधान।

"ण" के लगानेके स्थान।

५८। ঋ, র্, ষ के बादका दन्त्य ন मूर्द्धन्य् होता है। जैसे—ঋণ, বর্ণ, তৃণ, বিদীর্ণ, বিষ্ণু, উষ্ণ, সহিষ্ণু।

५८। ঋ, র্, ষ के बाद स्वरवर्ण, कवर्ग, पवर्ग, হ য ব या अनुस्वार व्यवधान रहने पर भी दन्त्य न मूर्द्धन्य होता है। जैसे—কারণ, দর্পণ, পাষাণ, নির্ব্বাণ, রুক্মিণী, বৃংহণ, বিস্মরণ।

६०। उल्लिखित वर्णके सिवा और कोई वर्ण व्यवधान में नहीं होता। जैसे—অর্চ্চনা কীর্ত্তন, রসনা।

६१। पदके अन्तमें या दूसरे पदमें न रहनेसे वह मूर्द्धन्य नहीं होता जैसे—দুরপনেয়, দুর্নাম, দুর্নয়।

६२। क्रियाके अर्न्तार का दन्त्य न मूर्द्धन्य नहीं होता। जैसे—করেন, ধরেন, মারেন।

६३। ত, থ, দ, ধ, संयुक्त न "ণ" नहीं होता। जैसे—প্রান্ত, ভ্রান্ত, রন্ধ্র।

थोड़ेसे स्वाभाविक मूर्द्धन्य ণ विशिष्ट पद है। जैसे—বাণি, মণি, বেণী, গুণ, কঙ্কণ, গণ, বিপণি, পণ, আপণ, বীণা, স্থাণু, নিপুণ, লবণ, কণিকা, বাণ, মৎকুণা, শোণ, কোণ, কল্যাণ, কণা, অণু, কাণ, ধূণ, বণিক इत्यादि।

६४। অ আ भिन्न स्वरवर्ण अथवा क और र इन वर्णों के किसी भी परस्थित पदके बीचका दन्त्य স मूर्द्धन्य होता है। विसर्ग व्यवधान रहनेपर भी षत्व होता है। लेकिन সাৎ प्रत्ययका স मूर्द्धन्य नहीं होता। जैसे—মুমূর্ষু, বক্ষ্যমান, জিগীর্ষা, চিকীর্ষা, পরিষ্কার, নিষেধ, অধিষ্ঠান, আবিষ্কার इत्यादि।

कुछ शब्दोंका ষ स्वाभाविक ही मूर्द्धन्य होता है। जैसे

ভাষা, পাষাণ, কল্মষ, আষাঢ়, কল্মাষ, কষায়, কষ্ট কুল্মাষ ইত্যাদি।

पद।

सारे पद पाँच भागोंमें बाँटे गये हैं। यथा; (१) विशेष्य (२) विशेषण, (३) सर्व्वनाम, (४) अव्यय (५) क्रिया।

विशेष्य।

कोई चीज, व्यक्ति, जाति, गुण और क्रिया वाचक शब्दको বিশেষ্য कहते हैं। जैसे;—বস্ত্র, মৃত্তিকা; রাম, যদু; গায়, মনুষ্য; ভদ্রতা, মহত্ত্ব; গমন, ভোজন इत्यादि।

विशेष्य पदमें লিঙ্গ, বচন, পুরুষ और কারক होते हैं। इनके जाननेसे वाक्यार्थ जाननेमें सुभीता होता है।

लिंग।

जिसके द्वारा पुरुष, स्त्री आदि जातिका ज्ञान होता है उसे लिङ्ग कहते हैं।

लिङ्ग तीन प्रकारके होते हैं। पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और क्लीवलिङ्ग।

बँगला भाषामें क्लीवलिङ्ग का कोई विशेष रूप नहीं

होता। फल, जल, अरण्य प्रभृति क्लीवलिङ्ग शब्दोंका रूप पुंलिङ्ग जैसा होता है।

जिन शब्दोंसे पुरुष जातिका ज्ञान होता है, वे पुंलिङ्ग कहे जाते हैं। जैसे;—মনুষ্য, বালক, সিংহ, অশ্ব इत्यादि।

जिन शब्दोंसे स्त्री जातिका बोध होता है उन्हें स्त्रीलिङ्ग कहते हैं। जैसे;—স্ত্রী, কন্যা, হরিণী, নারী, মহিষী, হস্তিনী, ঘোটকী, কুক্কুরী इत्यादि।

विद्युत, रात्रि, लता, बुद्धि, पृथिवी, नदी, लज्जा, शोभा, एवं ज्योत्स्ना, इनके अर्थमें जिन शब्दोंका प्रयोग होता है वे स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे,—সৌদামিনী, বসুমতী, যামিনী, इत्यादि।

याद रखना चाहिये कि বিদ্যুৎ, তৃষ্ণা, বীণা, সভা, রুচি, নাড়ী, বনিতা, তারা, শ্রেণী, শোভা ধূলি, নদী, নীতি, সরিৎ, বেণী, সৌদামিনী, লতা, লজ্জা, কথা, নৌকা, নাসিকা, গ্রীবা, বিভা, ভাষা, হরিদ্রা, জিহ্বা, পুষ্করিণী इत्यादि थोड़े से शब्द सदा स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

सामान्य स्त्रीलिंग प्रत्यय।

(क) जिन शब्दोंके अन्तमें "অ" (अकार) होता है, स्त्रीलिङ्ग में "অ" के स्थानमें "আ" (आकार) हो जाता है। जैसे;—ক্ষীণ, ক্ষীণা; সর্ব্ব, সর্ব্বা; সবল, সবলা; দুর্ব্বল,

দুর্বিনা ; রাম, রামা ; মনোহর, মনোহরা ; কোকিল, কোকিলা ; কৃষ্ণ, কৃষ্ণা ; দীর্ঘ, দীর্ঘা इत्यादि।

(ख) जिन जातिवाचक शब्दोंके अन्तमें "অ" होता है, स्त्रीलिङ्गमें "অ" के स्थानमें "ই" हो जाती है। जैसे ;— ব্রাহ্মণ, ব্রাহ্মণী ; মৃগ, মৃগী ; রাক্ষস, রাক্ষসী ; অশ্ব, অশ্বী ; গোপ, গোপী ; সারস, সারসী ; পিশাচ, পিশাচী ; দানব, দানবী ; হংস, হংসী ; মানুষ, মানুষী ; কুরঙ্গ, কুরঙ্গী ; সর্প, সর্পী ; ব্যাঘ্র, ব্যাঘ্রী ; রজক, রজকী ; সিংহ, সিংহী ; মৎস্য, মৎসী इत्यादि।

(ग) जिन शब्दोंके अन्तमें ময়, দৃশ, চর और কর शब्द होते हैं उनका स्त्रीलिङ्ग प्रायः ईकारान्त होता है यानी उनके अन्तमें "ঈ" लगा दी जाती है। जैसे ;—প্রস্তরময়, প্রস্তরময়ী ; মৃণ্ময়, মৃণ্ময়ী ; যাদৃশ, যাদৃশী ; এতাদৃশ, এতাদৃশী ; খেচর, খেচরী ; সুখকর, সুখকরী ; জলচর, জলচরী ; শুভকর, শুভকরী ; স্বর্ণময়, স্বর্ণময়ী ; হিতকর, হিতকরী ; কিঙ্কর, কিঙ্করী ; সহচর, সহচরী ; इत्यादि।

(घ) जिन शब्दोंके अन्तमें "ইন্" होता है, उनके स्त्रीलिङ्गके रूपमें उनके अन्तमें "ঈ" हो जाती है। जैसे ;—দায়িন্, দায়িনী ; বিধায়িন্, বিধায়িনী ; মানিন্, মানিনী ; জ্ঞানিন্, জ্ঞানিনী इत्यादि।

(ङ) जिन शब्दोंके अन्तमें "বান্" होता है, उनके स्त्रीलिङ्गमें "বান্" के स्थानमें "বতী" हो जाती है। जैसे ;— গুণবান্, গুণবতী ; রূপবান্, রূপবতী ; इत्यादि।

(च) जिन शब्दोंके अन्तमें "অক" होता है उनके स्त्री-लिङ्गमें "অক" के स्थानमें "ইকা" हो जाता है। जैसे ;—পাচক, পাচিকা ; নায়ক, নায়িকা ; দায়ক, দায়িকা ; বালক, বালিকা ; গায়ক, গায়িকা इत्यादि।

(छ) अङ्गवाचक शब्द, स्त्रीलिङ्गके विशेषणमें, प्राय: "ঈ" कारान्त हो जाते हैं। जैसे ;—সুকেশ, সুকেশী ; সুমুখ, সুমুখী इत्यादि।

(ज) প্রথম, দ্বিতীয় और তৃতীয় शब्दोंके सिवा और सब पूरणवाचक शब्दोंके बाद स्त्रीलिङ्गमें "ঈ" होती है ; किन्तु প্রথম, দ্বিতীয় और তৃতীয় के बाद "আ" होता है। जैसे—চতুর্থী, পঞ্চমী, ষষ্ঠী, সপ্তমী, অষ্টমী, নবমী, দশমী इत्यादि और প্রথমা, দ্বিতীয়া, তৃতীয়া।

(झ) गुणवाचक "উ"कारान्त शब्दोंके बाद स्त्रीलिङ्गमें विकल्पसे "ঈ" होती है और पहले "উ" के स्थानमें "ব" होता है। जैसे ;—গুরু, গুর্ব্বী ; লঘু, লঘ্বী ; মৃদু, মৃদ্বী ; इत्यादि।

(ञ) जिन शब्दोंके अन्तमें "ঈয়স্" प्रत्यय होता है उनके स्त्रीलिङ्गके रूपमें, अन्तमें "ঈ" होजाती है। जैसे ;—লঘীয়স, লঘীয়সী ; গরীয়স, গরীয়সী ; ভূয়স, ভূয়সী ; প্রেয়স, প্রেয়সী ; इत्यादि।

(ट) जिन शब्दोंके अन्तमें "অৎ" होता है उनके स्त्री-लिङ्गमें प्राय: पीछे "ঈ" हो जाती है। जैसे—মহৎ, মহতী ; সৎ, সতী ; গুণবৎ, গুণবতী इत्यादि।

(ठ) जिन शब्दोंके अन्तमें "मৎ" और "বৎ" होते हैं उनके स्त्रीलिङ्गके रूपोंमें अन्तमें "ঈ" हो जाती है। जैसे ;—

शब्द	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
শ্রীমৎ	শ্রীমান্	শ্রীমতী
দয়াবৎ	দয়াবান্	দয়াবতী
জ্ঞানবৎ.	জ্ঞানবান্	জ্ঞানবতী.

(ड) जिन शब्दोंके अन्तमें "তা" और "তি" प्रत्यय होते हैं, वे शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे ;—গতি, মতি, ভক্তি, লঘুতা, ভদ্রতা इत्यादि।

(ढ) মাতৃ, দুহিতৃ. স্বসৃ; ননন্দৃ, যাতৃ आदि कुछ शब्दोंको छोड़कर जिन शब्दोंके अन्तमें "ঋ" होती है उनके स्त्रीलिङ्ग के रूपोंमें, शब्दके अन्तमें "ঈ" हो जाती है और "ঋ" के स्थानमें "র" हो जाता है। जैसे ;—

शब्द	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
দাতৃ	দাতা	দাত্রী
বিধাতৃ	বিধাতা	বিধাত্রী
কর্ত্তৃ	কর্ত্তা	কর্ত্রী

लेकिन মাতৃ का মাতা और দুহিতৃ का দুহিতা इत्यादि होता है।

(ण) কাল, গৌর, তরুণ, পুত্র प्रभृति शब्दोंके स्त्रीलिङ्गमें दीर्घ "ঈ" होजाती है। जैसे ;—

কাল, কালী ; গৌর, গৌরী ; তরুণ, তরুণী ; কুমার, কুমারী ; পুত্র. পুত্রী ; মণ্ডল, মণ্ডলী ; নগর, নগরী ; সুন্দর,

সুন্দরী ; চণ্ড, চণ্ডী ; পিতামহ, পিতামহী ; নর্ত্তক, নর্ত্তকী ; নট, নটী ; নদ, নদী ; ঘট, ঘটী ; কিশোর, কিশোরী ; নাগ, নাগী ;

(ত) कुछ शब्दोंके रूप स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्गमें एकसे होते हैं। जैसे—সম্রাট্, বিরাট, কবি इत्यादि।

(थ) कुछ शब्द स्त्रीजातिका बोध न करानेपर भी सदा स्त्रीजातिके रूपमें गिने जाते हैं। जैसे—আমলকী, হরীতকী, বদরী, কাশী, কাঞ্চী, কাবেরী, কদলী, মথুরা इत्यादि।

(द) कुछ ह्रस्व "ই" कारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द विकल्पसे "ঈ" कारान्त हो जाते हैं। जैसे,—রজনি, রজনী ; রাত্রি, রাত্রী ; শ্রেণি, শ্রেণী ; ভূমি, ভূমী ; সূচি, সূচী ; इत्यादि।

(ध) जनक प्रभृति कुछ शब्दोंका स्त्रीलिङ्गके रूपमें भेद होता है। जैसे—

জনক, জননী ; পিতা, মাতা ; বর, কন্যা ; ভ্রাতা, ভগিনী ; নর, নারী ; পুরুষ, স্ত্রী ; হিম, হিমানী, মামা, মামী ; বুড়া বুড়ী ; ঠাকুর, ঠাকুরাণী ; চণ্ডাল, চণ্ডালিনী ; শুক, সারী, ইত্যাদি।

(न) कुछ पुंलिङ्ग शब्दोंके स्त्रीलिङ्गके रूप नीचे और दिखाये जाते हैं। जैसे :—

पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
রাজা	রাজ্ঞী	বিদ্বান্	বিদুষী
রুদ্র	রুদ্রাণী	মাতুল	মাতুলানী*

* মাতুল शब्दके स्त्रीलिङ्ग में तीन रूप होते हैं :— মাতুলানী, মাতুলী, মাতুলা।

पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
ইন্দ্র	ইন্দ্রাণী	ব্রহ্মা	ব্রহ্মাণী
যুবা	যুবতী	ভব	ভবানী
বরুণ	বরুণানী	পাপীয়ান্	পাপীয়সী
বৈশ্য	বৈশ্যা	দাস	দাসী
শূদ্র	শূদ্রা	পৌত্র	পৌত্রী
দৌহিত্র	দৌহিত্রী	খুড়া	খুড়ী

बचन।

जिसके द्वारा वस्तुकी संख्या जानी जाती है उसे "बचन" कहते हैं।

बचन दो प्रकारके होते हैं:—

(१) एकबचन।

(२) बहुबचन।

एकवचन के विभक्ति युक्त पदके द्वारा केवल एक पदार्थ जाना जाता है। जैसे; বালক।

बहुवचन के विभक्ति पदके द्वारा, एक भिन्न, अनेक वस्तुओं का ज्ञान होता है। जैसे; বালকেরা।

"बालक" कहनेसे केवल एक बालक और "बालकेरा" कहनेसे एकसे अधिक बालक समझे जाते हैं।

बहुवचन में शब्दके पीछे রা, এরা, দিগ, গণ, গুলা, গুলি

इत्यादि शब्द लगाये जाते हैं। जैसे—मनुष्येरा, লোকগুলা, পুস্তকগুলী। *

पुरुष।

कारकके आश्रय को ही पुरुष कहते हैं। जैसे;

যদু পড়িতেছে=यदु पढ़ता है।

রামকে পড়াও=रामको पढ़ाओ।

यहाँ "यदु" कर्त्ताकारक है और "राम" कर्मकारक है। अतएव "यदु" और "राम" में से प्रत्येक कारक के आश्रय है। इसीसे इन में से प्रत्येक "पुरुष" कहा जाता है।

पुरुष तीन प्रकारके होते हैं:—

(१) उत्तम पुरुष। जैसे; আমি (मैं)

(२) मध्यम पुरुष। जैसे; তুমি (तुम)

(३) प्रथम पुरुष। जैसे; তিনি (वह)

---

* अप्राणिवाचक शब्दोंके बहुबचनमें রা, এরা, चिन्ह नहीं लगाये जाते। ऐसे शब्दोंके साथ গুলি, গুলা, সকল, সমূহ इत्यादि शब्द इस्तेमाल किये जाते हैं। नीचे दर्जेके प्राणि-वाचक शब्दोंके अन्तमें भी রা, এরা का प्रयोग नहीं होता। उनके अन्तमें भी গুলা, গুলি इत्यादि प्रयोग किये जाते हैं। जैसे; পত্রগুলি, জলবিন্দু সকল, পতঙ্গগুলি, কীটগুলা इत्यादि। ऐसा कभी नहीं होता—পত্রেরা, জলবিন্দুরা, পতঙ্গেরা, কীটেরা इत्यादि।

इन सब पुरुषोंके बाद के, ए, थे, ते, द्वारा, दिया, हइते, थेके, र, ए, एर, वगैरः शब्द जो इस्तैमाल होते हैं इन्हें विभक्ति अथवा चिन्ह कहते हैं। विभक्ति द्वारा ही वचन और कारक जाने जाते हैं।

कारक।

क्रियाके साथ जिस पदका किसी तरहका सम्बन्ध रहता है उसे कारक कहते हैं। जैसे বালক খেলিতেছে, আমি বৃক্ষ দেখিতেছি, তুমি অস্ত্র দ্বারা শাখা কর্ত্তন কর।

यहाँ खेलितेछे, देखितेछि और कर्त्तन ये तीनों क्रिया हैं। खेलनेका काम बालक करता है; इससे खेलितेछे क्रिया का सम्बन्ध बालकसे है; अतएव बालक एक कारक है। आमि वृक्ष देखितेछि, इस जगह मेरे देखनेका काम वृक्ष पर सम्पन्न होता है सुतरां देखितेछि इस क्रियाका आमि और वृक्षसे सम्पर्क है। अतएव आमि और वृक्ष दोनों ही कारक हैं।

कारक छे प्रकारके होते हैं। जैसे;—(१) कर्त्ता, (२) कर्म, (३) करण (४) सम्प्रदान, (५) अपादान, (६) अधिकरण।

कर्त्ता।

जो करता है, जो होता है अर्थात् जिससे कर्त्तृक क्रिया सम्पन्न होती है उसे कर्त्ता कहते हैं। कर्त्तामें प्रथमा विभक्ति

होती है। जैसे; রাম পুস্তক পড়িতেছে, শিশু চাঁদ দেখিতেছে, রাজা আসিতেছেন इत्यादि।

यहाँ पर पड़ितेछे क्रियाका "कर्त्ता" राम है; क्योंकि जो करता है उसीको कर्त्ता कहते हैं। राम पुस्तक पड़ितेछे, यहाँ पर कौन पुस्तक पढ़ता है? राम। इसलिये "राम" कर्त्ता है। शिशु चाँद देखितेछे, यहाँ पर चाँद कौन देखता है? शिशु; इसलिये "शिशु" कर्त्ता है। "राजा" आसितेछेन, यहाँ पर आता है कौन? राजा; इसलिये "राजा" कर्त्ता है।

कर्म्म।

जो किया जाता है, जो सुना जाता है, जो देखा जाता है, जो लाया जाता है, जो दिया जाता है, जो लिया जाता है, जो रक्खा जाता है, जो पकड़ा जाता है, जो मारा जाता है, उसे कर्म कहते हैं। कर्ममें द्वितीया विभक्ति होती है। कर्मकी विभक्तियों के चिन्ह ये हैं কে, রে, এরে अथवा য়। जैसे; শ্যাম হরিকে ধরিতেছে, সিংহ মাংস খায়, রাম পুস্তক পড়িতেছে इत्यादि।

क्रियामें क्या या किसको यह प्रश्न करनेसे जो पद मिलता है उसी को उस क्रियाका कर्म्म जानना। क्रिया में "कौन" प्रश्न करनेसे कर्त्ता मिलता है।

श्याम हरिको धरितेछे ;'धरितेछे' क्रिया है,कौन धरितेछे ? इस प्रश्नके उत्तरमें श्याम मिलता है ; इस लिये "श्याम" कर्त्ता है। श्याम क्या या किसको पकड़ता है ?इस प्रश्नसे हरि मिलता है ; इसलिये "हरि" कर्म्म है। इसी तरह और उदाहरण समझ लो।

कुछ क्रियाओंके दो दो कर्म्म रहते हैं, अर्थात् জিজ্ঞাসা, দেওয়া इत्यादि कतिपय धातुओं तथा कथनार्थ और णिजन्त धातुओंके दो दो कर्म रहते हैं। इन धातुओंका नाम द्विकर्म्मक है। जैसे—মাতা শিশুকে চন্দ্র দেখাইতেছেন, গুরু শিষ্যকে কাব্য পড়াইতেছেন, আমি তারককে টাকা দিয়াছি, ধীরেন্দ্র সতীশকে ইহা বলিল इत्यादि।

माता शिशुके चन्द्र देखाइतेछेन, यहाँ पर "देखाइतेछेन" क्रिया है। कि देखाइतेछेन ? चन्द्र ; इसलिये "चन्द्र" एक कर्म्म है। और काहाके देखाइतेछेन ? शिशुके ; इसलिये "शिशुके" और एक कर्म्म हुआ ; अतएव देखाइतेछेन इस क्रियाके दो कर्म्म हुए। गुरु शिष्यके काव्य पड़ाइतेछेन, यहाँ पर "पड़ाइतेछेन" क्रिया है। कि पड़ाइतेछेन ? काव्य ; इस लिये "काव्य" एक कर्म्म हुआ। काहाके पड़ाइतेछेन ? शिष्यके। इसलिये "शिष्यके" और एक कर्म्म हुआ ; अतएव पड़ाइतेछेन क्रिया द्विकर्म्मक हुई। इसी तरह आमि तार-कके टाका दियाछि, यहाँ पर "दियाछि" क्रिया हुई ; कि

दियाछि ? टाका ; इसलिये "टाका" कर्म्म है। काहाके दियाछि ? तारकके ; इसलिये "तारकके" और एक कर्म हुआ ; अतएव दियाछि इस क्रियाके दो कर्म हुए। धीरेन्द्र सतीशके इहा बलिल, यहाँपर "बलिल" क्रिया है। कि बलिल ? इहा ; इसलिये "इहा" एक कर्म हुआ। काहाके बलिल ? सतीशके ; इसलिये "सतीशके" यह पद भी एक कर्म हुआ। अतएव बलिल क्रियाके दो कर्म हुए।

करण कारक।

जिसके द्वारा काम पूरा किया जाता है उसको करण कारक कहते हैं। करण में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे ; দায় দ্বারা কাষ্ঠ কাটিতেছে ; চক্ষু দ্বারা চন্দ্র দেখিতেছে, জল দ্বারা ভূমি আর্দ্র হইয়াছে इत्यादि।

दाय द्वारा काष्ठ काटितेछे ; यहाँ पर दाय (कुलहाड़ी) द्वारा काटनेका काम पूरा होता है इसलिये "दाय" करण कारक हुआ। चक्षु द्वारा चन्द्र देखितेछे ; यहाँ पर चक्षु द्वारा देखनेकी क्रिया सम्पन्न होती है ; इसलिये "चक्षु" करण कारक हुआ। जल द्वारा भूमि आर्द्र हइयाछे ; यहाँ पर जल द्वारा आर्द्र होनेका काम पूरा होता है ; इसलिये "जल" करण कारक हुआ।

দ্বারা, দিয়া, করিয়া, তে इत्यादि विभक्ति चिन्हों के द्वारा करण कारक का निर्णय होता है, इस लिये ये करण कारक की विभक्तियाँ हैं। क्रियामें क्रिसकें द्वारा प्रश्न करनेसे जो मिलता है वही करण कारक होता है। जैसे—দন্ত দ্বারা চর্ব্বণ করে, নেত্র দিয়া দেখে, যষ্টি করিয়া, লাঠিতে इत्यादि।

यहाँपर 'दन्त', 'नेत्र' और 'यष्टि', 'लाठि', करण कारक हैं। द्वारा, दिया, करिया और ते इन चारों विभक्तियों द्वारा करणकारक का निर्णय होता है।

सम्प्रदान कारक।

अपना अधिकार नष्ट करके जिसको कोई चीज़ दी जाती है उसको सम्प्रदान कारक कहते हैं। सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है। इसकी विभक्ति के चिन्ह के और रे हैं। जैसे —দরিদ্রকে অন্ন দাও, यहाँ पर "दरिद्रके" यह पद सम्प्रदान कारक हुआ। जिस दान में अधिकार रहता है अर्थात् जब दी हुई चीज़ फिर 'ले लेनेकी' इच्छासे दी जाती है तब वह सम्प्रदान न होकर कर्म्म होते है। जैसे— রজককে বস্ত্র দিতেছে; यहाँ पर रजक कर्म्म कारक है।

अपादान कारक।

जिससे कोई आदमी या चीज़, भीत, चलित,

रक्षित, गृहीत, उत्पन्न, अन्तर्हित, निवारित, विरत, पराजित, आवद्ध या भेदित होता है, उसका नाम अपादान कारक है। अपादानमें पञ्चमी विभक्ति होती है। इस विभक्ति का चिन्ह है —हइते। जैसे—ব্যাঘ্র হইতে ভীত হইতেছে; বৃক্ষ হইতে পত্র পড়িতেছে, দস্যু হইতে ধন রক্ষা করিতেছে, মেঘ হইতে বৃষ্টি হইতেছে, পাপ হইতে বিরত হইবে, দুষ্ট লোক হইতে অন্তর্হিত হইতেছে, পুষ্প হইতে ফল উৎপন্ন হয় इत्यादि।

व्याघ्र हइते भीत हइतेछे, यहाँपर व्याघ्रसे भीत होने के कारण "व्याघ्र" अपादान कारक हुआ। वृक्ष हइते पत्र पड़ि-तेछे, वृक्षसे पत्रका गिराव होता है इसलिये "वृक्ष" अपादान कारक हुआ। दस्यु हइते धन रक्षा करितेछे, यहाँपर दस्यु से धन रक्षा करनेके कारण "दस्यु" अपादान कारक हुआ। मेघ हइते वृष्टि हइतेछे; यहाँपर मेघसे वृष्टि पैदा होती है, इसलिये "मेघ" अपादान कारक हुआ। पाप हइते विरत हइवे, यहाँ पर पापसे विरत होनेके कारण "पाप" अपादान कारक हुआ। दुष्ट लोक हइते अन्तर्हित हइतेछे, यहाँपर दुष्टलोक से अन्तर्हित होनेके कारण "दुष्ट लोक" अपादान कारक हुआ। पुष्प हइते फल उत्पन्न हय, यहाँपर पुष्प से फल पैदा होता है; इसलिये "पुष्प" अपादान कारक हुआ।

হইতে या থেকে इत्यादि अपादान कारक की विभक्तियां हैं। जैसे—पांच थेके तीन वियोग कर। भक्त क

इइते भय पाइतेछि। बाड़ी थेके जान, इत्यादि। यहाँपर "पाँच", "भल्लूक" और "बाड़ी" अपादान कारक हैं। इइते और थेके इन दो विभक्तियों द्वारा अपादान कारक जाना जाता है।

अधिकरण।

वस्तु या क्रिया के आधारको अधिकरण कहते जैसे—
বায়ু সর্ব্ব স্থানে আছে, বৃক্ষে ফল আছে, দেহে বল আছে, দুগ্ধে মাখন আছে इत्यादि।

वायु सर्व्व स्थाने आछे, यहाँ पर "सर्व्व स्थाने" यह पद 'आछे' क्रिया का आधार है इसलिये "सर्व्व स्थाने" अधिकरण कारक हुआ। वृक्षे फल आछे, यहाँपर 'आछे' क्रिया है; कोथाय आछे? वृक्षे; इस लिये "वृक्षे" अधिकरण कारक हुआ। देहे बल आछे, यहाँ पर 'आछे' क्रिया है; कोथाय आछे? देहे; इसलिये "देहे" अधिकरण कारक हुआ। दुग्धे माखन आछे, यहाँ पर दुग्ध माखनका आधार है; इसलिये "दुग्धे" अधिकरण कारक हुआ।

তে, এতে, এ, য়া, য়,—ये सब अधिकरणकी विभक्तियाँ हैं। जैसे; জলে মৎস্য বাস করে, শাখায় কিংবা শাখাতে বসিয়া কাক ডাকিতেছে इत्यादि।

यहाँपर "जले, शाखाय या शाखाते" अधिकरण कारक हैं।

अधिकरण तीन प्रकारके होते हैं—आधाराधिकरण, कालाधिकरण और भावाधिकरण।

वस्तु या क्रिया का आधार होने ही से उसको आधाराधिकरण कहते हैं। आधाराधिकरण चार प्रकार के हैं;—विषयाधार, व्याप्ताधार, सामीप्याधार और एक देशाधार।

कोई वस्तु, अधिकरण होने से अगर 'तद्विषये' (उसमें) ऐसा अर्थ समझ पड़े; तो उसका नाम "विषयाधार अधिकरण" होता है। जैसे, শিল্পকারের শিল্পকর্ম্মে নৈপুণ্য দেখায়, अर्थात् शिल्पकार्य्य में निपुणता है; শাস্ত্রে পারদর্শিতা আছে, यहाँपर "शिल्पकर्मे" और "शास्त्रे" ये दो पद विषयाधार अधिकरण हैं।

जो सब आधार में व्याप्त होकर रहता है उसका नाम "व्याप्ताधार" है। जैसे—ইক্ষুতে রস আছে, अर्थात ऊख में रस है। দুগ্ধে মাখন আছে, अर्थात् दूध में मक्खन है, इसलिये यहाँ पर "इक्षुते" और "दुग्धे" ये दोनों पद व्याप्ताधार अधिकरण हुए।

समीपे (नज़दीक, पास) यह अर्थ प्रकट होने से उसे "सामीप्याधार" कहते हैं। जैसे, গঙ্গায় বাস কর, यहाँ पर गङ्गा के निकट रहता है ऐसा अर्थ प्रकट होता है; इसलिये "गङ्गाय" पद सामीप्याधार अधिकरण है।

यदि एकाधार हो,तो उसे "एक देशाधिकरण" कहते हैं। जैसे—বনে ব্যাঘ্র আছে। यहाँपर यह नहीं समझना होगा

कि सारे बन में बाघ है; बल्कि यह समझना होगा कि बन के किसी एक स्थान में बाघ है; इसलिये 'बने' यह एक देशाधार अधिकरण हुआ।

कालवाचक शब्द अधिकरण होने से उसको "कालाधिकरण" कहते हैं; अर्थात् दिन, रात्रि, मास, पक्ष, यखन, तखन, इत्यादि समय-वाचक शब्द अगर अधिकरण हों तो उसको कालाधिकरण कहते हैं। जैसे—প্রত্যুষে গাত্রোত্থান করা উচিত, মধ্যাহ্নে সূর্য্যের কিরণ খরতর হয়, তিনি তখন ছিলেন না, যখন যাইবে আমিও যাইব, বর্ষায় বৃষ্টি হয় इत्यादि।

प्रत्युषे गात्रोत्थान करा उचित, यहाँपर प्रत्यूषे अर्थात प्रभात काले (सवेरे) समझा जाता है; इस लिये "प्रत्यूषे" यह पद कालाधिकरण है। मध्यान्हे सूर्य्येर किरण खरतर हय, यहाँ पर मध्यान्हे कहनेसे मध्यान्हकाल समझा जाता है; तिनि तखन छिलेन ना, यहाँ पर तखन कहने से वही समय समझा जाता है। यहाँपर "तखन" पद कालाधिकरण है। जखन जाइबे आमिओ जाइब, यहाँपर जखन शब्द द्वारा समय समझा जाता है; इसलिये "जखन" पद कालाधिकरण हुआ। वर्षाय वृष्टि हय, यहाँ वर्षा शब्द द्वारा वर्षा काल समझा जाता है इसलिये "वर्षा" पद कालाधिकरण है।

गमन, दर्शन, भोजन, श्रवण इत्यादि जितने भाव-

विहित क्रिया पद किसी समापिका क्रिया की अपेक्षा करते हैं उनका नाम भावाधिकरण है। जैसे—হরির গমনে তিনি দুঃখিত হইবেন, চন্দ্রের দর্শনে আমি বড় সুখী হই, ব্রাহ্মণের ভোজনে সকলেই সন্তুষ্ট হয়, আত্মীয় বিয়োগে সকলেই শোকাকুল হয় ইত্যাদি।

हरिर गमने तिनि दुःखित हइबेन, यहाँ पर हरिर गमने इसका अर्थ 'हरिर गमन हइले', ऐसा कहनेसे किसी समापिका क्रिया की ज़रूरत होती है; नहीं तो वाक्य सम्पूर्ण नहीं होता; इसलिये "गमने" यह पद भावाधिकरण हुआ। ब्राह्मणेर भोजने सकलेइ सन्तुष्ट हय, यहाँपर ब्राह्मणेर भोजने इसका अर्थ 'ब्राह्मणेर भोजन हइले', ऐसा कहनेसे कोई समापिका क्रिया चाहिये, नहीं तो वाक्य पूरा नहीं होता; इस लिये "भोजने" यह पद भावाधिकरण हुआ। चन्द्रेर दर्शने आमि बड़ सुखी हइ, यहाँपर दर्शने इसका अर्थ 'दर्शन करिले', ऐसा कहने से एक समापिका क्रिया का प्रयोजन होता है नहीं तो वाक्य समाप्त नहीं होता; इस लिये दर्शने यह भावाधिकरण हुआ। आत्मीय वियोगे सकलेइ शोकाकुल हय, यहाँपर "वियोगे" इसका अर्थ 'वियोग हइले' ऐसा कहनेसे एक समापिका क्रिया आवश्यक है; नहीं तो वाक्य अधूरा रहता है; इस लिये "वियोगे" यह पद भावाधिकरण है।

सम्बन्ध पद।

क्रियाके साथ अन्वित नहीं होता, इसीसे सम्बन्धको कारक नहीं कहते। विशिष्ट पद के साथ विशेष्य पदके सम्पर्कको ही "सम्बन्ध पद" कहते हैं। सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है। उसका रूप र या এর है। जैसे—রামের বাড়ী, শ্যামের কাপড়, আমের গাছ, চন্দ্রের কিরণ, সাধুর ভদ্রতা, সাগরের জল इत्यादि।

रामेर बाड़ी, यहाँ पर राम और बाड़ी दोनों विशेष्य पद हैं। बाड़ीके साथ रामका सम्बन्ध है; क्योंकि रामको छोड़ कर बाड़ी में दूसरेका अधिकार नहीं है; इसलिये "रामेर," यह पद सम्बन्ध पद हुआ और राम पद के आगे एर विभक्ति जोड़नेसे रामेर पद बना। इसी तरह श्यामेर, आमेर, चन्द्रेर, साधुर, सागरेर ये सब भी "सम्बन्ध पद" हैं।

सम्बोधन।

आह्वान करनेको सम्बोधन कहते हैं। सम्बोधन के समय जो पद प्रयोग किया जाता है उसे "सम्बोधन पद" कहते हैं। जैसे;--

ভ্রাতঃ চল = भाई चलो।

রাম তুমি যাও = राम तुम जाओ।

মাধব ভাল আছ ?=माधव अच्छे हो ?

ওহে হরি=ओ हरि।

ওরে চন্দ্র=अरे चन्द्र।

ऊपरके उदाहरणोंमें "भ्रात:", "राम", "माधव" "हरि" और "चन्द्र" सम्बोधन पद हैं।

नोट—सम्बोधन पदोंके आगे হে, ও, অয়ি, হা, অরে, হরে प्रभृति कितने ही अव्यय शब्द प्रायः लगाये जाते हैं। लेकिन किसी किसी जगह सम्बोधन पद के पहले सम्बोधन-सूचक अव्यय शब्द नहीं लगाये जाते।

संस्कृत व्याकरण के नियमानुसार अकारान्त को छोड़ कर और तरह के शब्दों के सम्बोधन पद के एक वचन में रूपान्तर होता है; बहुवचन में नहीं होता।

जैसे;

शब्द	सम्बोधन पद
शकुन्तला	अयि शकुन्तले
दुर्म्मति	रे दुर्म्मते
सखि	हे सखे
प्रेयसी	हा प्रेयसि
शिशु	हे शिशो
वधू	हा वधु
मातृ	हा मात:
राजा	हे राजन्

शब्द	सम्बोधन पद
भगवान्	हे भगवन्
ज्ञानी	हे ज्ञानिन्
मतिमान्	हे मतिमन्

ऊपर जो सम्बोधन के रूप दिखाये गये हैं, वह सब संस्कृत व्याकरण के नियमानुसार हैं और प्राय बँगला भाषामें संस्कृत के क़ायदे से ही रूपान्तर होकर सम्बोधन व्यवहार किये जाते हैं; लेकिन बहुत से बँगला व्याकरणाचार्य्यों का मत है कि बँगला में सम्बोधन पद के रूप ठीक कर्त्ताकारक की तरह होते हैं। जैसे; हे पिता, रे दुर्म्मति, हे शिशु, ओ सखा, हा भगवान् इत्यादि; लेकिन अधिकांश लोगोंने संस्कृत का क़ायदा ही ठीक माना है।

"शकुन्तला" शब्द आकारान्त है यानी शकुन्तला का अन्तिम अक्षर "आ" है। आकारान्त सभी शब्दों का रूप सम्बोधन में शकुन्तला के समान होगा। जैसे; अयि शकुन्तले, दुर्गे इत्यादि।

"दुर्म्मति" शब्द इकारान्त है यानी दुर्म्मति शब्दका अन्तिम अक्षर "इ" है। इकारान्त शब्दों के रूप सम्बोधन में "दुर्म्मतिके" समान होंगे। जैसे; रे दुर्म्मते, हे कवे।

इसी तरह सम्बोधनमें ईकारान्त शब्दोंके रूप "प्रेयसि"; उकारान्त शब्दोंके रूप "शिशो"; ऊकारान्त शब्दों के रूप

"बधु"; ऋकारान्त शब्दोंके रूप "मातः"; नकारान्त शब्दोंके रूप "राजन्" की तरह होंगे।

अर्थ विशेषमें विभक्ति निर्णय।

जहाँ বিনা, ব্যতিরেকে, ব্যতীত, ঐ, ভিন্ন इत्यादि शब्द इस्तेमाल किये जाते हैं, वहाँ इनके पहिले का पद कर्म्मकारक के अनुरूप होता है। जैसे;—

ধন বিনা সুখ হয় না।

धन बिना सुख नहीं होता।

তাঁহাকে ভিন্ন কাজ হইবে না।

उसके सिवाय औरसे काम न होगा।

धिक् और नमस्कारार्थ शब्दोंका योग होने से, पहिलेके शब्द में कर्म की विभक्ति लगती है—यानी शब्द के बाद "কে" लगाना होता है। जैसे;

মূর্খকে ধিক্! তোমাকে নমস্কার।

मूर्खको धिक्कार। तुमको नमस्कार।

जिन शब्दों के साथ সহিত, প্রতি, সমান, তুল্য, উপরি, সমান, इत्यादि शब्दोंका योग होता है अथवा जिन शब्दों के साथ ये शब्द लगाये जाते हैं, उन शब्दों में सम्बन्ध पदकी विभक्तियाँ लगती हैं। जैसे;—

তোমার সহিত। বাক্যের উপরি।

তাহার সঙ্গে। রামের তুল্য।

আমার প্রতি। তোমার সমান।

प्राधान्य-वाचक शब्दों का योग होने से भी "सम्बन्ध" की विभक्ति लगती है। जैसे ;

পর্ব্বতের প্রধান হিমালয়।

কবির শ্রেষ্ঠ কালিদাস।

ধার্ম্মিকের শিরোমণি নল।

अपेक्षार्थ शब्द के परे होने से, पहले के पदको "निर्द्धार" कहते हैं। जैसे ;

রাম অপেক্ষা শ্যাম সুশীল।

তৈল অপেক্ষা ঘৃত ভাল।

इन दोनों वाक्योंमें "राम" और "तैल" निर्द्धार पद हैं।

शब्दरूप।

विशेष्य पद के लिङ्ग, पुरुष, बचन प्रभृति निरूपित हो चुके हैं। अब शिक्षार्थियोंके जानने के लिये शब्दरूप दिखा देते हैं।

पुंलिंग 'मानव' शब्द।

कारक	एकबचन	वहुबचन
कर्त्ता	মানব	মানবেরা
	मनुष्य, मनुष्यने	मनुष्य, मनुष्योंने

कारक	एकबचन	वहुबचन
कर्म	মানবকে	মানবদিগকে
	मनुष्यको	मनुष्योंको
करण	মানব দ্বারা	মানবদিগের দ্বারা
	मनुष्यसे	मनुष्योंसे
सम्प्रदान	মানবকে	মানবদিগকে
	मनुष्यको, के, लिये	मनुष्योंको, के, लिये
अपादान	মানব হইতে	মানব সকল হইতে
	मनुष्य से	मनुष्यों से
अधिकरण	মানবে	মানব সকলে
	मनुष्यमें, पर	मनुष्योंमें, पर
सम्बन्ध	মানবের	মানবদিগের
	मनुष्यका, के, की	मनुष्यों का, के, की
सम्बोधन	হে মানব	হে মানবেরা
	हे मनुष्य	हे मनुष्यो

ফল शब्द ।

कारक	एकबचन	वहुबचन
कर्त्ता	ফল	ফল সকল
कर्म	ফল	ফল সকল
करण	ফল দ্বারা	ফল সকল দ্বারা

इत्यादि ।

पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग शब्दोंके रूप प्राय ऊपर की तरह ही होते हैं। जिन शब्दों के कारक विशेष में विभक्तियों के भिन्न भिन्न रूप निरूपित किये गये हैं, केवल उन्हीं शब्दोंमें कुछ भेद होता है। अर्थात् अकारान्त, इकारान्त ईकारान्त उकारान्त प्रभृति शब्दोंके किसी किसी कारक में भिन्न रूप होते हैं।

जो शब्द संस्कृत शब्दों से कुछ रूपान्तर होकर बँगला में बरते जाते हैं उनमें से कुछ शब्द उदाहरण के तौर पर नीचे दिये जाते हैं।

संस्कृत	बँगला	संस्कृत	बँगला
সখি	সখা	ধনিন্	ধনী
পিতৃ	পিতা	তেজস্	তেজ
ত্বচ	ত্বক্	ফলতস্	ফলত
বণিজ	বণিক্	বিদ্বস্	বিদ্বান্
মহৎ	মহান্	রাজন্	রাজা
পাপীয়স্	পাপীয়ান্	দিশ্	দিক্
মনস্	মন	যশস্	যশ
গুণবৎ	গুণবান্	বুদ্ধিমৎ	বুদ্ধিমান্
উপানহ	উপানৎ	জ্যোতিস্	জ্যোতি
প্রেমন্	প্রেম	পথিন্	পথ
বেধস	বেধাঃ		

विशेषण।

जिस शब्द के प्रयोग करने से किसी का गुण व अवस्था प्रकाशित हो, उसे "विशेषण" या गुणवाचक शब्द कहते हैं। जैसे—

শীতল জল = ठण्ढा पानी।

মিষ্ট ফল = मीठा फल।

উত্তম বালক = अच्छा बालक।

বৃদ্ধ অশ্ব = बूढ़ा घोड़ा।

মনোহর পুষ্প = मनोहर फूल।

পুরাতন বৃক্ষ = पुराना पेड़।

লোহিত বসন = लाल कपड़ा।

সৎ লোক = भला आदमी।

বড় গাছ = बड़ा पेड़।

ছোট ছেলে = छोटा लड़का।

অলস বালক = सुस्त बालक।

পাকা আম = पक्का आम।

শুষ্ক ভূমি = सूखी धरती।

গরম দুগ্ধ = गरम दूध।

কাল পাথর = काला पत्थर।

বিশুদ্ধ বায়ু = शुद्ध हवा।

इस जगह "शीतल" शब्द विशेषण है। क्योंकि इस शब्द से ही जल को शीतलता प्रकाशित होती है। इसी भाँति मिष्ट, वृद्ध प्रभृति शब्द भी विशेषण हैं। जिन शब्दों के नीचे काली काली रेखाएँ खींची हैं, वे सब विशेषण हैं।

कारक, वचन और पुरुष के भेद से विशेषण के रूपमें भेद नहीं होता। क्योंकि उसमें कारक आदि नहीं होते। केवल स्त्रीलिङ्ग में रूप-भेद होता है। जैसे; নবীনা রমণী, গুণবতী ভার্য্যাকে, বিদ্যাবতী বালিকার।

कुछ विशेषण पद, कभी कभी, विशेषण के विशेषण होते हैं। जैसे; অত্যন্ত কঠিন, বড় মন্দ, অতি সুস্বাদু इत्यादि।

कितने ही विशेषण पद क्रिया के विशेषण हो जाते हैं। जैसे; শীঘ্র শিখিয়াছে, মন্দ মন্দ বহিতেছে।

सर्व्वनाम।

प्रसङ्ग क्रमसे एक व्यक्ति या एक वस्तुका ज़िक्र बारम्बार करना होता है; लेकिन बार बार एक ही व्यक्ति और एक ही वस्तुका ज़िक्र न करके उनके स्थानोंमें और बहुतसे पद इस्तेमाल करनेका क़ायदा है। इस तरह किसी पदकी जगह में जो पद आता है उसको "सर्व्वनाम" कहते हैं।

রাম বনে গেলেন, তাঁহার শোকে রাজা মরিলেন।

रामके बन जानेपर, उनके शोकमें राजा मर गये।

इस जगह "राम" इस पदको जगह 'ताँहार" पद आया है; अतएव "ताँहार" पद सर्व्वनाम है।

जिस पदकी जगह सर्वनाम इस्तेमाल किया जाता है उस पदका जो लिङ्ग और बचन होता है, सर्वनामका भी वही लिङ्ग और बचन होता है; किन्तु स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्ग के भेदसे सर्वनाम में भेद नहीं होता। जैसे;

সীতা অত্যন্ত পতিব্রতা, তিনি পতিকে পরম দেবতা বলিয়া মানিতেন।

सीता अत्यन्त पतिव्रता (थी), वह पतिको परम देवता कह कर मानती थी।

(২) অশ্বগণ বলিষ্ঠ জন্তু, তাহারা ভারী ভারী বস্তু লইয়া দ্রুতবেগে চলিয়া যায়।

घोड़े बलवान् जानवर होते हैं, वे भारी भारी चीज़ लेकर तेज़ीसे चले जाते हैं।

यहाँ "सीता" स्त्रीलिङ्ग एक बचनान्त पद है। सुतरां "तिनि" यह सर्व्वनाम भी स्त्रीलिङ्ग और एक बचनान्त पद है। "अश्वगण" पुंलिङ्ग और बहुबचनान्त पद है; इसी लिये "ताहारा" यह सर्व्वनाम भी पुंलिङ्ग और बहुबचनान्त पद है।

विशेष्य पद की भाँति सर्व्वनाम पद के भी बचन, पुरुष

और कारक होते हैं। विशेष्य पदका अर्थ देखकर ही वचन, पुरुष और कारक निर्णय किया जाता है।

सर्व्वनाम ये हैं—আমি, মুই, তুমি, তুই, আপনি, তিনি, সে, তাহা, তা, যিনি, যে, যাহা, ইনি, এ, ইহা, এই, উনি, ও, উহা, কে, সর্ব্ব, সব, উভয়, অন্য, ইতর, পর, অপর, इत्यादि।

युष्मद्, अस्मद्, यद्, तद्, एतद्, इदम्, किम इत्यादि; ये सब संस्कृत सर्व्वनाम हैं। इन सब के असल रूप भाषा में काम नहीं आते। इन सब के स्थानमें আমি, তুমি, সে, प्रभृति शब्द और उनके रूप भाषामें व्यवहार किये जाते हैं। संस्कृत सर्व्वनाम शब्द कृत्, तद्धित और समासमें व्यवहार होते हैं।

कितने ही सर्वनाम शब्द विभक्तियोंके लगाने से और ही तरह के हो जाते हैं। जैसे,—

मूलशब्द	चलित शब्द सम्भ्रान्तको	असम्भ्रान्तको
অস্মদ্	আমি	
ভবৎ	আপনি	
যুষ্মদ্	তুমি	তুই
যদ্	যাহা, যা, তিনি,	যে
তদ্	তাহা, তা, তিনি	সে
ইদম্ } এতদ্ }	এহ, ইহা, ইনি	এ

অদস্	ঐ, উহা, উনি	ও
কিম্	কে, কি, কোন্	
সর্ব্ব	সব	

विभक्ति-योग के समय अन्य, पर, उभय, इतर प्रभृति कितने ही शब्दों में कुछ रद्द बदल नहीं होता अर्थात् ये ऐसे के ऐसे ही रहते हैं।

सर्व्वनाम शब्द के रूप।

অস্মদ্ শব্দ।

	एकवचन	वहुवचन
कर्त्ता	আমি	আমরা
	मैं, मैंने	हम, हमने
कर्म्म	আমাকে	আমাদিগকে
	मुझे, मुझको	हमें, हमको
करण	আমা দ্বারা	আমাদিগের দ্বারা
	मुझ से	हम से
सम्प्रदान	আমাকে	আমাদিগকে
	मुझे, मुझको	हमें, हमको
अपादान	আমা হইতে	আমাদিগের হইতে
	मुझ से	हम से

अधिकरण	আমাতে	আমাদিগের মধ্যে
	मुझमें, मुझपर	हममें, हम पर
सम्बन्ध	আমার	আমাদিগের
	मेरा	हमारा

"যে" शब्द पुं० व स्त्री०

	एकवचन	वहुवचन
कर्त्ता	যে	যাহারা
	जिसने	जिन्होंने
कर्म	যাহাকে	যাহাদিগকে
	जिसे, जिसको	जिन्हें, जिनको

इत्यादि।

"সে" शब्द पुं० व स्त्री०

कर्त्ता	সে	তাহারা
	वह, उसने	वे, उन्होंने
कर्म	তাহাকে	তাহাদিগকে
	उसको	उनको

आदर प्रकाशनार्थ "যে" के स्थान में "যিনি"; "যাহারা" के स्थानमें যাঁহারা; সে के स्थानमें "তিনি"; "তাহারা" के स्थानमें "তাঁহারা" इत्यादि इस्तेमाल किये जाते हैं।

और सब सर्व्वनामों के रूप भी ऐसे ही होते हैं। सर्व्व-नाममें "सम्बोधन" नहीं होता केवल सातकारक होते हैं।

अव्यय।

जिस शब्दके बाद कोई विभक्ति न हो, कारक-भेद से जिसके रूपमें भेद न हो, एवं जिसका लिङ्ग और बचन न हो, उसको "अव्यय" कहते हैं।

संयोजक, वियोजक आदि भेदोंसे अव्यय अनेक प्रकारके होते हैं। संयोजक अव्यय ये हैं—এবং, ও, আর, আরও, অপিচ, কিন্তু, অথচ, যদি, যদ্যপি, যেহেতু, যেন, বরং, সুতরাং, কেননা, কাজে, কাজের इत्यादि।

वियोजक अव्यय ये हैं :—বা, কিংবা, অথবা, নতুবা, কি, তথাপি, তথাচ, না হয়, নয় ত, নহিলে, নচেৎ, অন্যথা इत्यादि।

शोक और विस्मय आदि सूचक अव्यय ये हैं—আঃ, উঃ, হায়, হা, উহু, ছিছি, রাম রাম, হরি হরি इत्यादि।

प्र, परा, अप, सम्, अव, अनु, निर, दुर्, वि, अधि, सु, उत्, परि, प्रति, अभि, अति, अपि, उप, आ, एइ, इ, "उपसर्ग" कहते हैं।

उपरोक्त उपसर्ग जब क्रिया-वाचक पदके पहले लग जाते हैं तब वह क्रिया-वाचक पद भिन्न भिन्न अर्थ प्रकाश करता है। जैसे ;

দান = देना　　আদান = लेना

গমন = जाना　　আগমন = आना

অপকার = बुराई　　উপকার = भलाई

क्रिया प्रकरण।

होना, करना, प्रभृतिको "क्रिया" कहते हैं। जिन शब्दोंसे यह क्रिया समझी जाती है, उनको 'क्रिया पद" कहते हैं। जैसे; হইতেছে, করিতেছে इत्यादि।

भू, कृ, हश्य, गम, प्रभृतिको धातु कहते हैं। ये ही क्रिया की मूल होती हैं।

क्रिया दो तरह की होती हैं:—

(१) सकर्म्मक।

(२) अकर्म्मक।

जिन क्रियाओं के कर्म नहीं होते, वह सब क्रियाएँ, अर्थात् হওয়া, যাওয়া, বসা, থাকা, পড়া, জাগা, মরা, বাঁচা, হাসা, নাচা, খেলা, কাঁদা, কাঁপা प्रभृति धातुओंकी क्रियाएँ अकर्म्मक होती हैं; क्योंकि इन सब क्रियाओं के कर्म नहीं होते। जैसे; বৃষ্টি হইতেছে, বৃক্ষটি মরিয়াছে इत्यादि। यहाँ हइतेछे, मरियाछे, ये दो क्रिया हैं लेकिन इनके कर्म नहीं हैं; इस वास्ते ये अकर्म्मक हैं।

जिन क्रियाओं के कर्म होते हैं, वह सब क्रियाएँ अर्थात् খাওয়া, দেখা, পাঠকরা, प्रभृति धातुओंकी क्रिया सकर्म्मक होती हैं; क्योंकि इन सब क्रियाओं के कर्म होते हैं। जैसे;

ঈশ্বর সকল করিতেছেন।

ईश्वर सब करता है।

সে পুস্তক পড়িতেছে।

वह पुस्तक पढ़ता है।

রাম অন্ন ভক্ষণ করিল।

रामने अन्न खाया।

द्विकर्म्मक क्रिया।

বলা, লেখা, জিজ্ঞাসা, দেখান, বুঝান प्रभृति क्रियाओंके दो कर्म होते हैं। इसी कारणसे इनको द्विकर्म्मक क्रिया कहते हैं। जैसे ;

রাম ব্রজকে তোমার কথা বলিয়াছে।

रामने व्रजको तुम्हारी बात बोल दी है।

আমি আজ তাঁহাকে সে বিষয় জিজ্ঞাসা করিব।

मैं आज उनसे इस विषयमें पूछूँगा।

ললিত শরৎকে পাখী দেখাইতেছেন

ललित शरत्‌को पक्षी दिखाता है।

पहिले उदाहरणमें "ब्रजके" और "कथा" ये दो कर्म "बलियाछे" क्रियाके हैं। दूसरे में "ताँहाके" और "विषय" ये दो कर्म "जिज्ञासा" क्रिया के हैं। तीसरे में "शरत्‌के" और "पाखी" ये दो कर्म "देखाइतेछेन" क्रिया के हैं।

क्रियाके जिस अङ्ग से काम के होनेका समय पाया जाय उसे "काल" कहते हैं।

काल तीन प्रकार के होते हैं:—

(१) वर्त्तमान।

(२) अतीत।

(३) भविष्यत्।

वर्त्तमान काल से यह पाया जाता है कि क्रिया का कार्य्य अभी हो रहा है। जैसे; শিশু খেলিতেছে। यहाँ खलनेका काम आरम्भ हुआ है लेकिन समाप्त नहीं हुआ है। ऐसी दशामें 'खेलितेछे' इसी तरह के रूप प्रयोग किये जाते हैं। यही प्रकृत वर्त्तमान काल है।

अतीत काल से यह पाया जाता है कि क्रियाका काम हो चुका है। अतीतकाल को भूतकाल भी कहते हैं। अपेक्षाकृत पूर्व्व पूर्व्व कालकी अतीत क्रियाको क्रमशः "अद्यतन" "अनद्यतन" और "परोक्ष" कहते हैं। जैसे; শিশু খেলিল, শিশু খেলিত, শিশু খেলিয়াছিল।

भविष्यत् काल से यह पाया जाता है कि क्रियाका कार्य्य आगे चलकर आरम्भ होनेवाला है। जैसे; শিশু খেলিবে।

विधि, अनुज्ञा, सम्भावना, प्रभृति क्रियाएँ और भी होती हैं।

किसी विषय के नियम बाँधनेको जो क्रिया इस्तेमाल

की जाती है उसे "विधि" कहते हैं। ऐसी क्रिया से किसी काल का बोध नहीं होता। जैसे—

গুরুজনকে ভক্তি করিও।

बाप और गुरु में भक्ति रक्खो।

किसी विषय की आज्ञा या अनुमति देनेको "अनुज्ञा" कहते हैं। जैसे,

সে দেখুক = वह देखो।

তুমি যাও = तुम जाओ।

বাড়ী যাও = घर जाओ।

চুরি করিও না = चोरी मत करना।

কার্য্যে ন্যায় ব্যবহার করিও।

काम में न्याय से काम लो।

প্রতিবাসীকে আত্মবৎ প্রীতি কর।

पड़ोसी से अपनी समान प्रीति कर।

অনুগ্রহ করিয়া আমাকে একখানি পুস্তক পড়িতে দিন।

कृपया मुझे एक पुस्तक पढ़नी को दीजिये।

यह होनेसे यह हो सकेगा, इस तरह के ज्ञान को "सम्भावना" कहते हैं। जैसे।

সে পাইতে পারে = वह पा सकता है।

তিনি যাইতে পারেন = वह जा सकते हैं।

আমি দিতে পারি = मैं दे सकता हूँ।

किस धातुका, कौन पुरुष, कौन कालमें, कैसा रूप होगा; ऐसे पद विन्यास को "धातुरूप" कहते हैं।

वर्त्तमान काल।

হওয়া ধাতু।

उत्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	प्रथम पुरुष
হইতেছি	হইতেছ	হইতেছে

अतीत काल।

उत्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	प्रथम पुरुष
হইলাম	হইলে	হইল
হইয়াছি	হইয়াছ	হইয়াছে
হইয়াছিলাম	হইয়াছিলে	হইয়াছিল

भविष्यत् काल।

उत्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	प्रथम पुरुष
হইব	হইবে	হইবে

वर्त्तमान काल।

করা ধাতু।

उत्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	प्रथम पुरुष
করিতেছি	করিতেছ	করিতেছে

अतीत काल।

उत्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	प्रथम पुरुष
করিলাম	করিলে	করিল
করিয়াছি	করিয়াছ	করিয়াছে
করিয়াছিলাম	করিয়াছিলে	করিয়াছিল

क्रियाओंके रूप समझने में कुछ कठिनता पड़ती है इस लिये हम नीचे कुछ उदाहरण और भी दे देते हैं।

सामान्य भूतकाल।

(Past Indefinite Tense.)

	एक बचन	बहुबचन
उ० पु०	আমি গিয়াছিলাম	আমরা গিয়াছিলাম
	मैं गया	हम गये
म० पु०	তুমি গিয়াছিলে	তোমরা গিয়াছিলে
	तुम गये	तुम लोग गये
प्र० पु०	সে গিয়াছিল	তাহারা গিয়াছিল
	वह गया	वे गये

आसन्न भूतकाल।

(Present Perfect Tense.)

	एक बचन	बहुबचन
उ० पु०	আমি গিয়াছি	আমরা গিয়াছি
	मैं गया हूँ	हम गये हैं
म० पु०	তুমি গিয়াছ	তোমরা গিয়াছ
	तुम गये हो	तुम लोग गये हो
प्र० पु०	সে গিয়াছে	তাহারা গিয়াছে
	वह गया है	वे गये हैं

भविष्यत् काल।

Future Indefinite.

	एक बचन	बहुबचन
उ० पु०	আমি যাইব	আমরা যাইব
	मैं जाऊँगा	हम जायँगे
म० पु०	তুমি যাইবে	তোমরা যাইবে
	तुम जाओगे	तुम लोग जाओगे
प्र० पु०	সে যাইবে	তাহারা যাইবে
	वह जायगा	वे जायँगे

कभी कभी सकर्म्मक क्रिया के कर्मपद नहीं होता। उस समय सकर्म्मक क्रिया अकर्म्मक की तरह काम करती है। जैसे—

আমি দেখিলাম = मैंने देखा।

তিনি লয়েন নাই = उन्होंने नहीं लिया।

यहाँ "দেখা" और "লওয়া" क्रियाओं के सकर्मक होने पर भी, कर्म पद के न होनेसे, वे अकर्म्मक के समान हो गयीं हैं।

बचन-भेद से क्रियाके रूप में फर्क नहीं होता। जैसे;

আমি করিতেছি = मैं करता हूँ।

আমরা করিতেছি = हम लोग करते हैं।

इस जगह दोनों बचनों में ही एक ही प्रकार की क्रिया का प्रयोग हुआ है। लेकिन हिन्दीमें ऐसा नहीं है। हिन्दीमें बचनके अनुसार क्रियामें भेद हो जाता है। जैसे; मैं करता हूँ और हम करते हैं। बँगला में "आमि" एक बचनके लिये "करितेछि" और "आमरा" बहुबचनके लिये भी "करितेछि" एक ही प्रकार की क्रिया इस्तेमाल की गयी है। लेकिन हिन्दीमें "मैं"के लिये "करता हूँ" और "हम" के लिये "करते हैं" भिन्न भिन्न रूप की क्रियाओंका प्रयोग किया गया है।

पुरुष और काल भेद से क्रिया का रूपान्तर हो जाता है। "आमि" इस पद की क्रिया को उत्तम पुरुष की क्रिया कहते

हैं। "तुम" इस पद की क्रियाको मध्यम पुरुष की क्रिया कहते हैं। इन के सिवाय और पदों की क्रिया को प्रथम पुरुष की क्रिया कहते हैं। जैसे;

আমি করিতেছি = मैं करता हूँ।

তুমি করিতেছ = तुम करते हो।

সে করিতেছে = वह करता है।

"आमि" उत्तम पुरुष है, उसकी क्रिया भी उत्तम पुरुष है। "तुमि" मध्यम पुरुष है, उस की क्रिया भी मध्यमपुरुष है। "से" प्रथम पुरुष है, उस की क्रिया भी प्रथमपुरुष है।

प्रथम पुरुष (3rd Person) के सम्भ्रान्त या माननीय होने से क्रियाके अन्तमें "न" और लगा दिया जाता है। जैसे;—

(१) তিনি করিয়াছেন = उन्होंने किया

(२) সে করিয়াছে = उसने किया

पहले उदाहरण में "तिनि" प्रथमपुरुष और आदरणीय है इसी से उसकी क्रिया "करियाछे" में "न" जोड़ दिया गया है; किन्तु "से" प्रथमपुरुष और साधारण मनुष्य है इससे उसकी क्रियामें "न" नहीं जोड़ा गया है।

कृदन्त।

जिस क्रियाके द्वारा वाक्य की समाप्ति न हो, वाक्य की

समाप्ति करनेके लिये एक और क्रिया की दरकार पड़े, उसको "असमापिका क्रिया" कहते हैं। जैसे; বলিয়া, করিতে, যাইতে इत्यादि ।

जिस जगह एक क्रिया करने पर और एक क्रिया करने की बात कहनी पड़े, उस जगह पहली क्रिया के अन्तमें "লে" जोड़ना पड़ता है। जैसे,

তিনি বলিলে আমি যাইব ।

वह बोला मैं जाऊँगा ।

इसी तरह করিলে, দিলে इत्यादि समझो ।

निमित्त अर्थमें क्रियाके पीछे "ते" जोड़ा जाता है। जैसे,

দিতে = দিবার নিমিত্ত = देनेके लिये ।

যাইতে = যাইবার নিমিত্ত = जानेके वास्ते ।

अनन्तरके अर्थमें धातुके बाद "য়া" जोड़ा जाता है। जैसे;

যাইয়া = গমনানন্তর = जाकर ।

দিয়া = দানান্তর = देकर।

শুইয়া = শয়নানন্তর = सोकर इत्यादि ।

जब क्रिया को विशेष्य पद करना होता है तब उसके बाद "অ", "ওয়া" इनमें से एकको जोड़ना होता है। जैसे;

বলা বা বলিবা = बोलना।

করা বা করিবা = करना ।

যাওয়া বা যাইবা = जाना ।

धातुके उत्तर कृत् प्रत्यय लगाकर शब्द बना सकते हैं।

ऐसे प्रत्ययोंका नाम "कृत" और निष्पन्न पदोंका नाम "कृदन्त" है।

धातुके उत्तर "अन" और "ति" प्रत्यय होते हैं। "अन" और "ति" प्रत्ययान्त पद प्राय हो क्रिया-वाचक विशेष्य होते हैं। जिन पदोंके अन्तमें "ति" होती है वे स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे;

धातु	प्रत्यय	पद	अर्थ
স্তু	অন, তি	স্তবন, স্তুতি	স্তবন করা
स्तु	अन, ति	स्तवन, स्तुति	स्तवन करनेका काम
কৃ	অন, তি	করণ, কৃতি	করা
कृ	अन, ति	करण, कृति	करना, काम
গম	অন, তি	গমন, গতি	যাওয়া
गम	अन, ति	गमन, गति	जानेका काम
মন	অন, তি	মনন, মতি	মানা
मन	अन, ति	मनना, मति	मानना, मति
দৃশ	অন, তি	দর্শন, দৃষ্টি	দেখা
दृश	अन, ति	दर्शन, दृष्टि	देखनेका काम
সৃজ	অন, তি	সর্জ্জন, সৃষ্টি	প্রস্তুত করা
सृज	अन, ति	सर्ज्जन, सृष्टि	प्रस्तुत करनेका काम
বচ	অন, তি	বচন, উক্তি	বলা
वच	अन, ति	वचन, उक्ति	बोलनेका काम

धातुके उत्तर कर्म वाच्य और अतीत कालमें "त" प्रत्यय

होता है। जिनके अन्तमें "त" प्रत्यय होता है वे पद प्राय ही कर्मके विशेषण होते हैं। जैसे;

धातु	प्रत्यय	पद	अर्थ
কৃ	ত (ক্ত)	কৃত	जो किया गया है।
শ্রু	ত	শ্রুত	जो सुना गया है।
বি+স্তৃ	ত	বিস্তীর্ণ	जो व्याप्त है।
ভক্ষ	ত	ভক্ষিত	जो खाया गया है।
বচ	ত	উক্ত	जो कहा गया है।
যুজ	ত	যুক্ত	जो जोड़ा गया है।
দা	ত	দত্ত	जो दिया गया है।
গৈ	ত	গীত	जो गाया गया है।
জ্ঞা	ত	জ্ঞাত	जो जाना गया है।
বন্ধ	ত	বদ্ধ	जो बाँधा गया है।
ভজ	ত	ভক্ত	जो भजा गया है।
পা	ত	পীত	जो पिया गया है।
বি+ধা	ত	বিহিত	जो किया गया है।
ভুজ	ত	ভুক্ত	जो खाया गया है।
ছিদ	ত	ছিন্ন	जो काटा गया है।

धातुके उत्तर "তা" (तृन्), "ই" (णिन्) "অক" (णक), "অন" प्रभृति प्रत्यय लगाये जाते हैं। जिनके अन्तमें ये प्रत्यय होते हैं वे कर्त्ताके विशेषण होते हैं।

अकर्मक धातुके कर्त्तृवाच्य अतीत कालमें "ত" (ক্ত) लगाया जाता है। जैसे;

धातु	प्रत्यय	पद	अर्थ
দা	তা (তৃণ)	দাতা	जो दे।
শ্রু	তা	শ্রোতা	जो सुने।
জি	তা	জেতা	जो जय करे।
কৃ	তা	কর্ত্তা	जो करे।
বচ	তা	বক্তা	जो बोले।
ভুজ	তা	ভোক্তা	जो खाय।
গ্রহ	তা	গ্রহীতা	जो ग्रहण करे।
সৃজ	তা	স্রষ্টা	जो रचे।
স্থা	ঈ (ণিন)	স্থায়ী	जो स्थिर रहे।
ভূ	ঈ	ভাবী	जो हो।
দা	ঈ	দায়ী	जो दान करे।
যুজ	ঈ	যোগী	जो योग करे।
জি	ঈ	জয়ী	जो जय करे।
কৃ	অক	কারক	जो करे।
ভজ	অক	ভাজক	जो भाग करे।
যুজ	অক	যোজক	जो योग करे।
নিন্দ	অক	নিন্দক	जो निन्दा करे।
পঠ	অক	পাঠক	जो पढ़े।
পচ	অক	পাচক	जो पाक करे।

धातु	प्रत्यय	शब्द	अर्थ
গ্রহ	অক	গ্রাহক	जो ग्रहण करे।
গৈ	অক	গায়ক	जो गान करे।
হন	অক	ঘাতক	जो मारे।
দৃশ	অক	দর্শক	जो देखे।
নৃত	অক	নর্ত্তক	जो नाचे।
দা	অক	দায়ক	जो दान करे।
শী	অক	শায়ক	जो सोवे।
রুধ্	অক	রোধক	जो रोध करे।
স্তু	অক	স্তাবক	जो स्तव करे।
ভূ	অক	ভাবক	जो हो।
হৃ	অক	হারক	जो हरण करे।
ছিদ্	অক	ছেদক	जो काटे।
গম	ত (ক্ত)	গত	जो बीत गया।
শ্রম	ত	শ্রান্ত	थका हुआ।
জন	ত	জাত	पैदा हुआ।
ভূ	ত	ভূত	जो हुआ है।
ভিদ	ত	ভিন্ন	फोड़ा हुआ।
মদ	ত	মত্ত	मतवाला।
মৃ	ত	মৃত	जो मर गया।

धातुके उत्तर "तव्य", "अनीय" और "य" प्रत्यय होता है। जिन धातुओंके बाद ये प्रत्यय लगते हैं वे सब धातु कर्म कारक के विशेषण होते हैं और भविष्यत् कालका अर्थ प्रकाश करते हैं। जैसे,

धातु	प्रत्यय	पद	अर्थ
শ্রু	তব্য, অনীয়, য়	শ্রোতব্য, শ্রবণীয়, শ্রব্য	যাহা শুনা যায়।
श्रु	तव्य, अनीय, य	श्रोतव्य, श्रवणीय, श्रव्य	जो सुना जाय।
গ্রহ	তব্য, অনীয়, য়	গ্রহীতব্য, গ্রহণীয়, গ্রাহ্য	যাহা লওয়া যায়।
ग्रह	तव्य, अनीय, य	ग्रहीतव्य, ग्रहणीय, ग्राह्य	जो लिया जाय।
গম	তব্য, অনীয়, য়	গন্তব্য, গমনীয়, গম্য	যেখানে যাওয়া যায়।
गम	तव्य, अनीय, य	गन्तव्य, गमनीय, गम्य	जाने योग्य,जहाँ जाया जाय।
ভুজ	তব্য, অনীয়, য়	ভোক্তব্য, ভোজনীয়, ভোজ্য	যাহা খাওয়া যায়।
भुज	तव्य, अनीय, य	भोक्तव्य, भोजनीय, भोज्य	जो खाया जाय, खाने योग्य।
কৃ	তব্য, অনীয়, য়	কর্ত্তব্য, করণীয়, কার্য্য	যাহা করা যায়।
कृ	तव्य, अनीय, य	कर्त्तव्य, करणीय, कार्य्य	जो करा जाय,करने योग्य।
পা	তব্য, অনীয়, য়	পাতব্য, পানীয়, পেয়	যাহা পান করা যায়।
पा	तव्य, अनीय, य	पातव्य, पानीय, पेय	जो पिया जाय, पीनेयोग्य।

तद्धित।

शब्दके पीछे अर्थ विशेषमें जिस प्रत्ययके जोड़नेसे शब्द बनता है, उसको "तद्धित प्रत्यय" कहते हैं।

हिन्दीमें भी पाँच प्रकारके तद्धित होते हैं।

(१) अपत्यवाचक। जिससे सन्तानत्व पाया जाय। इसके बनाते समय कहीं "अ" के स्थान में "आ" कर देते हैं। जैसे ; "संसार" से सांसारिक।

कहीं "इ" के स्थान में "ऐ" कर देते हैं जैसे ; शिव से "शैव" "इतिहास" से "ऐतिहासिक"।

कहीं "उ" के स्थानमें "औ" कर देते हैं। जैसे ; "उर्मिला" से "और्मिलेय" "कुन्ती" से "कौन्तेय", इत्यादि।

(२) कर्तृवाचक। ये "वाला" या "हारा" लगानेसे बनते हैं। जैसे ; रोटीवाला, पानीवाला, दूधवाला और लकड़हारा।

(३) भाववाचक। ये "ता" या "त्व" "आई" आदि लगाने से बनते हैं। जैसे ; मूर्खता, नीचता, चतुरता, गुरुता, नीलत्व, दीर्घत्व, महत्व, गुरुत्व, सुघडाई।

(४) गुणवाचक। ये "वान", "मान", "दायक" इत्यादि लगाने से बनते हैं। जैसे ; बलवान, स्वरूपवान, गुणदायक, सुखदायक, बुद्धिमान इत्यादि।

(५) ऊनवाचक। इनसे लघुता पाई जाती है। खाटसे खटिया।

ऊपर हम हिन्दी व्याकरणकी रीतिसे तद्धित विषयको समझा आये हैं। हिन्दी में समझाने की यहाँ जरूरत थी कि हिन्दी जाननेवाले अल्प परिश्रम से बंगला व्याकरणके अनुसार तद्धित को आसानी से समझ सकें।

शब्दके उत्तर अपत्यादि अर्थ में "इ", "एय", "य", "आयन", "ईय", "इक", "अ", "ईन" और "क" प्रत्यय लगाये जाते हैं।

अपत्यार्थमें	विकारार्थमें	सम्बन्धीयर्थमें	भावार्थमें	कर्त्तृ वा कर्मार्थमें
দাশরথি	হৈম	দেশীয়	যৌবন	তার্কিক
ভাগিনেয়	রাজত	শারীরিক	শৈশব	বৈদান্তিক
দৌহিত্র	ধাতব	সৌর	লাঘব	কায়িক
যাদব		পার্থিব	কার্কশ্য	পৈতৃক
পাণ্ডব		স্বর্গীয়		

विशेषण शब्द के उत्तर भावार्थ में "त्व", 'ता", और "इमन्" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे ;

शब्द	त्व	ता	इमन्
গুরু	গুরুত্ব	গুরুতা	গরিমা
মহৎ	মহত্ব	মহত্তা	মহিমা
নীল	নীলত্ব	নীলতা	নীলিমা

शब्दके उत्तर "है"(আছে) इस अर्थ को प्रगट करनेके लिये "मत्", 'वत्", "विन्" और "इन्" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे,।

मत्	वत्	विन्	इन्
বুদ্ধিমান্	ধনবান্	মেধাবী	ধনী
শ্রীমান্	বিদ্যাবান্	মায়াবী	জ্ঞানী
ভানুমান্	ভাস্বান্	পয়স্বী	শিখী
পিতৃমান্	বেগবান্	মনস্বী	দণ্ডী
গোমান্	মূল্যবান্	তেজস্বী	মায়ী

पूर्णार्थ प्रत्यय युक्त पद :—

দ্বিতীয়	दूसरा	ঊনবিংশতিতম	उन्नीसवाँ
তৃতীয়	तीसरा	বিংশ	बीसवाँ
চতুর্থ	चौथा	একবিংশ	इक्कीसवाँ
পঞ্চম	पाँचवाँ	একবিংশতিতম	इक्कीसवाँ
ষষ্ঠ	छठा	ষষ্টিতম	साठवाँ
সপ্তম	सातवाँ	সপ্ততিতম	सत्तरवाँ
অষ্টম	आठवाँ	অশীতিতম	अस्सीवाँ
নবম	नवाँ	নবতিতম	नब्बेवाँ
দশম	दशवाँ	শততম	सौवाँ
একাদশ	ग्यारहवाँ	পঞ্চষষ্টিতম	पैंसठवाँ
দ্বাদশ	बारहवाँ		
ত্রয়োদশ	तेरहवाँ		

गुणवाचक शब्दके उत्तर आधिक्य के अर्थ के लिये "तर" "तम" "इष्ट" और "ईयस्" प्रत्यय लगाते हैं । जैसे ;

शब्द	तर	तम	इष्ठ	ईयस्
গুরু	গুরুতর	গুরুতম	গরিষ্ঠ	গরীয়ান্
অল্প	অল্পতর	অল্পতম	অল্পিষ্ঠ	অল্পীয়ান্
প্রশস্য	প্রশস্যতর	প্রশস্যতম	শ্রেষ্ঠ	শ্রেয়ান্
বৃদ্ধ	বৃদ্ধতর	বৃদ্ধতম	বর্ষিষ্ঠ	বর্ষিয়ান্

शब्दके बाद तुल्यार्थ प्रगट करनेके लिये "वत्" और "कल्प" लगाते हैं । जैसे,

জলবৎ	जलके समान
গুরুবৎ	गुरुके समान
অধ্যাপককল্প	अध्यापकके समान

संख्यावाचक शब्दके बाद प्रकार अर्थ में "धा" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे, দ্বিধা, তৃধা, শতধা, इत्यादि।

स्वरूपके अर्थ में शब्दके पीछे "मय" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे, স্বর্ণময়, মৃণ্ময়, কাষ্ঠময় इत्यादि।

सर्व्वनाम शब्दके बाद कालके अर्थ में "दा" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे, সর্ব্বদা, একদা, इत्यादि।

सर्व्वनाम शब्दके बाद आधार अर्थ में "त्र" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे ; সর্ব্বত্র, অন্যত্র, একত্র इत्यादि।

कालवाचक शब्दके बाद उत्पन्न अर्थमें "তন" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे ; পূর্ব্বতন, অধুনাতন इत्यादि।

किम् शब्द निष्पन्नपदके पीछे अनिश्चय अर्थ में "চিৎ" प्रत्यय लगाते हैं। जैसे ; কিঞ্চিৎ, কদাচিৎ इत्यादि।

समास।

जब दो तीन अथवा अधिक पद अपने कारकों के चिन्हों को त्याग कर आपस में मिल जाते हैं तब उनके योग को "समास" कहते हैं और उन के योग से जो शब्द बनता है उसे "सामासिक" शब्द कहते हैं। जैसे ; ফল ও মূল—फल

दो पृथक पदोंको "फल मूल" इस तरह एक पद बना कर भी काम में ला सकते हैं। अग्नि, जल ও वायु—इन तीनोंको एक पद बना कर "অগ্নি জল বায়ু" इस तरह प्रयोग कर सकते हैं। 'রাজার বাটী' इन दोनों पदों को "রাজবাটী" इस भाँति एक पद करके प्रयोग कर सकते हैं। कई शब्दोंको मिला कर इस भाँति एक पद करने को ही समास कहते हैं।

समास पाँच प्रकार की होती हैं—द्वन्द, तत्पुरुष, कर्म्मधारय, बहुव्रीहि, और अव्ययीभाव।

हिन्दीमें समास छः प्रकार की मानी हैं। उसमें इनके सिवाय "द्विगु" समास और मानी है।

द्वन्द्।

द्वन्द वह है जिसमें कई पदोंके बीच "और" (ও) का लोप करके एक पद बना लिया जाय। जैसे;

ফল ও ফুল = ফলফুল   রাজা ও রাণী = রাজারাণী
মাতা ও পিতা = মাতাপিতা   রাম ও লক্ষ্মণ = রামলক্ষ্মণ

तत्पुरुष।

तत्पुरुष समास उसे कहते हैं जिस में पहला पद कर्त्ता कारक को छोड़ दूसरे किसी भी कारक के चिन्ह सहित हो और इसी पदका अर्थ प्रधान हो।

कर्म्मपद के साथ जो समास होती है उसे द्वितीया तत्-पुरुष कहते हैं। जैसे ;

বিস্ময়কে আপন্ন = বিস্ময়াপন্ন।

পরলোককে প্রাপ্ত = পরলোক প্রাপ্ত।

करण पदके साथ जो समास होती है उसे तृतीया तत्-पुरुष कहते हैं। जैसे ;

শোক দ্বারা আকুল = শোকাকুল।

মোহ দ্বারা অন্ধ = মোহান্ধ।

আত্মা দ্বারা কৃত = আত্মকৃত।

अपादान पदके साथ जो समास होती है उसे पञ्चमी तत्पुरुष कहते हैं। जैसे ;

পাপ হইতে মুক্ত = পাপমুক্ত।

বৃক্ষ হইতে উৎপন্ন = বৃক্ষোৎপন্ন।

सम्बन्ध पद के साथ जो समास होती है उसे षष्टी तत्-पुरुष कहते हैं। जैसे ;

বিশ্বের পিতা = বিশ্বপিতা।

চন্দ্রের দর্শন = চন্দ্রদর্শন।

রাজার পুত্র = রাজপুত্র।

अधिकरण पद के साथ जो समास होती है उसको सप्तमी तत्पुरुष कहते हैं। जैसे ;

গৃহে বাস = গৃহবাস।

হস্তে স্থিত = হস্তস্থিত।

স্বর্গে গত = স্বর্গগত।

हीन, जन प्रभृति कितने ही शब्दों के योग से तृतीया तत्पुरुष समास होती है। जैसे ;

জ্ঞান দ্বারা হীন = জ্ঞানহীন।

বিদ্যা দ্বারা শূন্য = বিদ্যাশূন্য।

कर्म्मधारय।

जिसमें विशेषण का विशेष्य के साथ सम्बन्ध हो उसे कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे ;

इस समास में विशेषण (Adjective) पद पहले और विशेष्यपद (Noun) पीछे रहता है और विशेष्यपद (Noun) का अर्थ ही प्रधान रूप से प्रकाशित होता है। जैसे ;

পরম + আত্মা = পরমাত্মা। মহা + রাজ = মহারাজ।

পরম + ঈশ্বর = পরমেশ্বর। সৎ + কর্ম্ম = সৎকর্ম্ম।

यहाँ परम और आत्मा इन दो पदों में समास हुई है। परम पद विशेषण और आत्मा पद विशेष्य है। विशेषण पद पहिले और विशेष्य पद पीछे है और उसके ही अर्थ ने प्रधान रूपसे प्रकाश पाया है ; बस, इसी कारण से इसे "कर्मधारय" समास कहते हैं।

बहुव्रीहि।

बहुव्रीहि समास उसे कहते हैं जिस में दो तीन या अधिक पदोंका योग होकर जो शब्द बने उसका सम्बन्ध और किसी पद से हो। इस की परिभाषा इस भाँति भी हो सकती है—विशेष्य विशेषण अथवा दो या उससे अधिक विशेष्य पदों में समास करने पर यदि उन शब्दोंका अर्थ प्रकाशित न होकर किसी और ही वस्तु या व्यक्ति का अर्थ प्रकाशित हो तों उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

बहुव्रीहि समास करने पर सारे पद प्राय: विशेषण होते हैं; कभी कभी विशेष्य भी होते हैं। जैसे; ক্ষীণ-কায়, यहाँ ক্ষীণ और কায় इन दो पदों में समास हुई है। ক্ষীণ विशेषण और কায় विशेष्य है; किन्तु इन दोनों पदोंका अर्थ पृथक पृथक भाव से बोध नहीं होता, क्षीण-काय विशिष्ट कोई व्यक्ति बोध होता है; अतएव यहाँ बहुव्रीहि समास हुई।

क्षीणकाय, इस पदसे यदि क्षश शरीर यही अर्थ समझा जाय और उससे कुछ व्याघात न हो, तो कर्मधारय समास हुई समझनी होगी; क्योंकि इस जगह विशेष्य पद का अर्थ ही प्रधान रूपसे प्रकाश पाता है।

চক্রপাণি, यहाँ भी চক্র पद विशेष्य है। उसका अर्थ